राजकीय कन्या महाविद्यालय

सेक्टर–14, गुरुग्राम (हरियाणा)

रमणीक

सत्र: 2017–2018

EDITORIAL BOARD

Sitting Row : Left To Right --- Dr. Kiran Bala (Editor, Sanskrit Section), Dr. Sunita Sheoran (Editor, Hindi Section), Dr. Sushila Kumari (Principal), Smt. Yogita Bajaj (Editor, English Section), Dr. Amitesh Boken (Editor-in-Chief)

Standing Row : Left To Right -- Babita (Student Editor, Sanskrit Section), Kajal Tiwari, (Student Editor, Hindi Section) Divya Rathi (Student Editor, English Section)

प्राचार्या-संदेश

प्रिय विद्यार्थियो !

उपवन में खिलने वाले पुष्प न केवल उस उपवन की शोभा बढ़ाते हैं अपितु, अपनी सुगंध के माध्यम से दूर-प्रदेशों को भी सुरभिमय बनाकर उनमें स्वर्गिक आनंद भर देते हैं। 'रमणीक' हमारे महाविद्यालय के प्रतिभावान विद्यार्थियों की सृजनात्मक सुगंध को न केवल महाविद्यालय में अपितु, आस-पास के क्षेत्रों और समाज में प्रसारित करती रही है।

जीवंतता और रचनात्मकता का घनिष्ठ संबंध रहा है। जो जीवंत है, वह रचनात्मक भी होगा। जो रचनात्मक है, वह जीवंत भी होगा। 'रमणीक' के इस अंक से प्रबुद्ध विद्यार्थियों की पैनी विश्लेषणात्मक दृष्टि का, उनके हृदय के शुचितम एवं कोमलतम भावों का और उनके द्वारा उठाई गई विभिन्न सम-सामयिक समस्याओं का ज्ञान होता है। प्रकारांतर से कहना चाहिए कि इससे विद्यार्थियों की रचनात्मकता और महाविद्यालय के वातावरण की जीवंतता का सहज ही प्रतिबिंबित होती है।

मानव-सभ्यता सतत् विकास करके ही आज के उच्च विकसित शिखर पर पहुँची है। विकास की प्राप्ति के लिए ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करने होते हैं। लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए स्वप्नों का होना अनिवार्य है। स्वप्नों की प्राप्ति के लिए महत्वकांक्षी होना जरूरी है। महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए सतत् परिश्रम और अनुशासन की आवश्यकता होती है। अतः विद्यार्थियों को स्वप्न देखना चाहिए और महत्वाकांक्षी भी होना चाहिए। कोई भी व्यक्ति स्वप्नों के बिना सच्चा महत्वाकांक्षी नहीं हो सकता। चिड़िया की आसमान में उन्मुक्त उड़ान बिना पंखों के नहीं हो सकती। इसलिए स्वप्नों के पंखों को प्राप्त कीजिए। समय के अबाध प्रवाह में

महत्वाकांक्षाहीन व्यक्ति केवल मृत्यु प्राप्त करने का इंतजार करता रह जाएगा। दृढ़ता, विश्वास, आशा और सजग बुद्धिमत्ता आपके स्वप्नों को पूरा करने में सहायक होंगे।

समय की नब्ज को पकड़कर और उसी के अनुसार निर्णय लेकर कार्य करने से सफलता प्राप्त होती है। समय का सदुपयोग करने से प्राप्त लाभ के समान दूसरा कोई लाभ नहीं है। समय को व्यर्थ गँवाने की गलती के समान दूसरी कोई गलती नहीं है। इसलिए प्रबुद्ध व्यक्ति समय को व्यर्थ गँवाने की गलती करने पर दु:खी होते हैं और पश्चाताप करते हैं। रहीम ने कहा है-

समय-लाभ सम लाभ नहिं, समय-चूक सम चूक।

चतुरन चित रहिमन लगी, समय-चूक की हूक।।

अत: समय को व्यर्थ न गँवाते हुए निरन्तर अपने स्वप्नों और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए परिश्रम करते रहो।

अंत में मैं उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देती हूँ जिन्होंने महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त खेल-कूद, साहित्यक एवं सांस्कृतिक समारोह तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया है। ऐसे विद्यार्थियों के कारण ही यह महाविद्यालय हरियाणा प्रदेश में अपनी एक विशेष जगह बना सका है।

'रमणीक' के इस अंक के सभी रचनाकारों को भी बधाई व शुभकामनाएँ।

डॉ० सुशीला कुमारी
प्राचार्या
राजकीय कन्या महाविद्यालय
सेक्टर-14, गुरुग्राम

विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता करने वाले एवं पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की सूची

सत्र : 2017–2018

प्रियंका, एम.कॉम., प्रथम वर्ष

जयपुर में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कराटे प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल प्राप्त किया

सोनिया, बी.ए., तृतीय वर्ष

ने अन्तर्राष्ट्रीय एवं सीनियर नेशनल बॉल–बैडमिन्टन प्रतियोगिता में प्रतिभागिता की

मनीषा धनवाल, बी.ए, तृतीय वर्ष

ने अखिल भारतीय अन्तर–विश्वविद्यालयी 5R हॉकी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया

पायल, बी.ए., द्वितीय वर्ष

ने अखिल भारतीय अन्तर–विश्वविद्यालयी 5R हॉकी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया

नेहा, बी.एससी., तृतीय वर्ष

ने भोपाल में आयोजित अन्तर विश्वविद्यालयी शतरंज प्रतियोगिता में भाग लिया तथा नॉर्थजोन की अन्तर–विश्वविद्यालयी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया

प्रीती, बी.ए., द्वितीय वर्ष

ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में आयोजित बॉक्सिंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया तथा उड़ीसा राष्ट्रीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया

Dr. Sushila Kumari (Principal) Welcoming with Bouquet to Dr. Markandey Ahuja, (Vice Chancellor-Gurugram University, Gurugram) on the occasion of Convocation Function Held on March 26th, 2018

Dr. Sushila Kumari (Principal) Presenting Memento to Dr. Markandey Ahuja, (Vice Chancellor-Gurugram University, Gurugram) along with Sh. Vatsal Vashishth (H.C.S.) on the occasion of Convocation Function Held on March 26th, 2018

सम्पादक–मण्डल

प्रधान सम्पादक : डॉ० अमितेश बोकन

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

हिन्दी-अनुभाग-सम्पादिका : डॉ० सुनीता श्योराण

एसोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

छात्र-सम्पादिका : काजल तिवारी, बी.ए.-III (हिन्दी ऑनर्स)

अंग्रेजी-अनुभाग-सम्पादिका : श्रीमती योगिता बजाज

सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग

छात्र-सम्पादिका : दिव्या राठी, एम.ए.-II (अंग्रेजी)

संस्कृत-अनुभाग-सम्पादिका : डॉ० किरण बाला

एसोसियेट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

छात्र-सम्पादिका : बबिता, बी.ए.-III

प्रधान सम्पादक की कलम से

साहित्य संवेदनाओं का लेखा-जोखा होता है। संवेदनाएँ एक तरफ रचनाकार के भाव-स्तर को प्रकाशित करती हैं तो दूसरी तरफ उसके ज्ञान-स्तर को प्रकाशित करती हैं। कहना चाहिए कि भावात्मक संवेदन ज्ञानात्मक होकर साहित्य में प्रकट होता रहा है। इसी तरह ज्ञानात्मक संवेदन भावात्मक होकर साहित्य में प्रकट होता रहा है। सभ्यता और साहित्य के विकास का यही मूल आधार रहा है।

आधुनिक यांत्रिक सभ्यता का मानव नये ज्ञान और नये परिवेश में विशेष प्रकार के भावों से और विभिन्न प्रकार के ज्ञान से परिचालित है। नये रचनाकारों में समष्टि-भाव को छोड़कर व्यष्टि-भाव के प्रति मोह है। उनका रचनाएँ लिखने का समय, रचनाओं का आकार और भावों की गहनता— सभी कुछ घटता-घटता सिकुड़ता जा रहा है। चारों तरफ अपने आप को स्थापित करने की, पुरस्कृत होने की और प्रशंसित होने की जोर आजमाइश चल रही है। तीन-तीन पंक्तियों की कविता लिखने वाले भी दबंग तरीके से साहित्यकार होने का ढ़ोल पीट रहे हैं। कुकुरमुत्ता तो केवल बारिश में ही उगता है, परन्तु ऐसे रचनाकारों की खेती तो पूरे साल सूखे के मौसम में भी हरी-भरी रहती है। इनसे अच्छा तो कुकुरमुत्ता है, अपने नियम और काल का ध्यान रखकर ही आता है और चला जाता है। ये तो जाने का नाम ही नहीं लेते।

जिस तरह कपड़ों को फाड़कर और चीरा लगाकर पहनना आजकल फैशन बन गया है उसी तरह फेसबुक, व्हाट्सअप, यू-ट्यूब, इंस्टाग्राम और अन्य तमाम इलेक्ट्रोनिक माध्यमों पर भी लिखना गौरवपूर्ण समझा जाने लगा है। अतएव इन जगहों पर भी साहित्यकार पैदा हो रहे हैं— बिना खाद और पानी के। ऐसे फेसबुकिया साहित्यकार यूटोपिया में रहते हुए अपने मन में स्वयं की यश-कीर्ति की कल्पना मात्र से रोमांचित और प्रफुल्लित होते रहते हैं। इनका ज्ञान और संवेदनाएँ अनुभव की आग में पकी नहीं है। इसलिए इनसे गम्भीर जीवन-दृष्टि और औदात्यपूर्ण रचना की आशा करना बेमानी है। अतः नए रचनाकार को लिखने से पहले अपनी आत्मा को, अनुभव को, ज्ञान को और संवदनाओं को समृद्ध करने की आवश्यकता है।

'रमणीक' महाविद्यालय के नवोदित रचनाकारों के लिए एक ऐसा मंच है जहाँ वे आसानी से अपनी लेखनी को स्थान दे सकते हैं। पत्रिका विद्यार्थियों की छिपी हुई सृजनात्मक प्रतिभा को प्रकाशित करती है, उन्हें सृजन के लिए प्रेरित करती है और उनकी सृजना को उचित जगह देने का कार्य भी करती है।

अंत में इस अंक के सभी रचनाकारों शुभकामनाएँ और बधाई।

डॉ० अमितेश बोकन
एम. ए., एम. फिल., पी.-एचडी.
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

संस्कृत–अनुभाग – रमणीक 2017–18

सम्पादिका - डॉ. किरण बाला
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग

छात्र सम्पादिका - बबिता
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

अनुक्रमणिका

सम्पादकीयम्

1. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयं	बबिता, बी0ए0, तृतीय वर्ष
2. छन्दः रसानुभूतिः	ज्योति, बी0ए0, तृतीय वर्ष
3. परिणामो भयङ्करः	रचना, बी0ए0, तृतीय वर्ष
4. भारतीय समाजे नारीणां स्थितिः	दिव्या, एम0ए0, द्वितीय वर्ष
5. सुभाषितानि	बबिता, बी0ए0, तृतीय वर्ष
6. वैदिक - ज्ञानामृतम्	मोनिका, बी0ए0, तृतीय वर्ष
7. विचारणीयाः श्लोकाः	योगिता, बी0ए0, प्रथम वर्ष
8. ''सुशोभते भारतभूमिः''	अंजली, बी0ए0, तृतीय वर्ष
9. ''आधुनिक भारतस्य जागरणे स्वामी विवेकानन्दस्य भूमिका''	उपासना, बी0ए0, तृतीय वर्ष

सम्पादकीयम्

" शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात् " इत्यस्मिन् श्लोकवाक्ये शिक्षा कालकवलिता भवति इति यदुक्तं तत्तु स्वार्थाय सम्पादितं, निरूपयुक्तं, क्रियारहित ज्ञानराशिञ्च सूचयति। " हुतञ्च दत्तञ्च तथैव तिष्ठति " इति तु तस्यैव श्लोकस्य अन्तिम वाक्यम्। दत्तं ज्ञानं (शिक्षा) न कदापि विफलतां गच्छति। अत: इदं स्पष्टं यत् न केवलं शिक्षाऽवाप्ति: अस्माकमुद्देश्यं स्यात् अपितु शिक्षादानम्। यदि शिक्षा सङ्क्रान्ता न भवति तर्हि सा नश्यति। तत्र हि गुरू शिष्य परम्परा रूपेण सङ्क्रान्ता शिक्षा धारारूपेण प्रवहन्ती सती लोकमुद्धरति। सेयं शिक्षा अनन्ता।

अनन्तमुखोपेताया: शिक्षाया: सङ्क्रमण प्रक्रिया: अपि अनन्ता: एव। शिक्षाया: सङ्क्रमणं न सर्वजनसाधारणम्। सुप्रशिक्षित:, स्वायत्ती कृत कौशल एव शिक्षाधाराम्बु इतरै: पाययितुं क्षमते। तत्र हि नाना मुखेन प्राप्तशिक्षां नानामुखेभ्य: प्रसारयितुं प्रशिक्षण संस्था: परिकल्पिता: वर्तन्ते।आसु प्रशिक्षण संस्थासु प्रशिक्षिता: शैक्षिक सिद्धान्तान् अधिगम्य शिक्षासङ्क्रमणकौशलानि आत्मसात्कृत्य तदनु बालन् बोधयितुं प्रभवन्ति।

शिक्षाया: सङ्क्रान्ति: तदैव सुष्ठु संभवति यदा सङ्क्रमणमाध्यमं प्रबलं वर्तते। सुभाषामाध्यमेनैव शिक्षाया: सङ्क्रमण सम्भवति। सुभाषामाध्यमेन उक्त: लिखितश्च विचार: सुष्ठु सङ्क्रान्त: भवतीत्यत्र नास्ति संशयकणिकाऽ पि। तत्रापि संस्कार सम्पन्नै: सम्प्रयुक्ता सोल्लिखिता च सुसंस्कृता भाषा न केवलं धारारूपेण प्रवहन्ती जिज्ञासूनां ज्ञानपिपासां उपशमयति अपि तु स्वान् संसेवितान् सर्वान् सैव पवित्री करोति च।

" अनभ्यासे विषं शास्त्रम् " इत्युच्यते। भाषणे लेखने च सिद्धि सम्पादनाय अभ्यास: अनिवार्यरूपेण कर्तव्य:। नवनवीनविचाराणां आविष्करणाय अपि चिन्तनस्य अभ्यासस्य च पात्रमधिकं वर्तते । चिन्तनाभ्यासेन न सर्व सम्भवति । सकाले प्रदत्तं मार्गदर्शनं प्रकल्पित अवसरश्च अत्र प्रामुख्यं भजति। एतदर्थ "रमणीक" अस्माकं महाविद्यालयस्य इयं पत्रिक सफला भविष्यतीति न संकल्प:। छात्राणाम् सर्वांगीण विकासे इयं पत्रिका तान् अवसरं प्रदा करोति। लेखन - कला विकासाय स्वविचारान् प्रकटीकर्तुं सुसाधनं पत्रिकेयम्। प्राध्यापका साहाय्येन, मार्गदर्शनेन च छात्रा: लिखितुं प्रयत्ना: कृता: इति सर्वेभ्य: धन्यवादा: आविष्क्रियन्ते।

जयतु भारतं जयतु संस्कृतम्

डॉ. किरण बाला
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)

"गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः"

पूजायाः कामना मानवे स्वाभाविकरूपेण विद्यते। केचित् धनम् पूजायाः कारणं मन्यन्ते। अन्ये विद्यां पूजायाः कारणं मन्यते। केचित् वृद्धावस्थां पूजायाः सम्मानस्य च कारण मन्यन्ते। परं पूजायाः कारणं तु गुणाः एव सन्ति। गुणयुक्तः जनः बालः स्त्री पुरूषः वा स्यात् तस्य पूजा अवश्यमेव भवति। गुणवान् एव पूजायाः पात्रम् भवति। अतः सत्यमेव कथितम्।

"गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः ।"

न केवल मानवाः एव पशुपक्षिणोऽपि गुणानां आधिक्येन सम्मानं लभन्ते। मधुर स्वर-गुणेन पिकः काकात् श्रेष्ठः मन्यते। शुकादयः अपि गुणादेव मान्यन्ते। मयूरः सौन्दर्यगुणेन सत्क्रियते। अतः मानवेन सततं गुणोपार्जने प्रयत्नं कर्त्तव्यम। कथितम् अपि –

"गुणेषु यत्नः पुरूषेण कार्यः।"

गुणिषु लिङ्ग भेदः आयुभेदः वा न गण्यते। गुणांलकृत बालकः अपि पूज्यते। बालः रामः अपि निजगुणानाम् प्रभावेन मंनासि जहार। गुणहीनः वृद्ध अपि तिरस्कारं प्राप्नोति। कंसादय वार्धकयेऽपि निन्दाम् एव अलभन्त। वयः अपि पूजायाः कारणं न भवति। नराः गुणैः योग्यतया च पूज्यन्ते। कालिदासेन अपि उक्तम् –

"न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते।"

रावणः महाबलवान् नृपः आसीत्। परं दुष्टः आसीत्। अतः कदापि आदरं न अलभत्। निर्गुणात् सर्वत्र निन्द्यते स्म।

एतदपि न आवश्यकं यत् केवलः पुरूषः एव समादरं लभेत्। नारी अपि गुणसम्पन्नाः श्रद्धां प्राप्नोति। सावित्र्याः त्यागः अद्यापि पूज्यते । मैत्रेयी, गार्गी प्रभृतयः विदुष्यः स्त्रियः स्वगुणैः एव विख्याताः महारानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, शस्त्रविद्यायां प्रवीणाः आसन्। मण्डनमिश्रस्य भार्या अतीव मेधाविनी आसीत्। ताः सर्वाः स्वगुणैः एव अद्यापि अस्मिन् लोके विराजन्ते। अतः उक्तं गुणाः पूजास्थानं सन्ति न च लिंग न च वयः इति साधोः वचः। अतः मानवैः गुणोपार्जने एव प्रयत्नः कार्यः। यतः गुणिनः एव चिरस्थापिनीं पूजा लभन्ते।

बबिता
बी०ए० तृतीय वर्ष

छन्दः रसानुभूतिः

छन्दश्शास्त्रम् – ''छन्दस्'' इति शब्दस्य प्रयोगः वेदेषु मन्त्रार्थकरूपेण कृतः वर्तते। पाणिनिना ''बहुलं छन्दसि'' इत्यस्मिन् सूत्रे अस्य अर्थः वेद इत्यपि स्वीकृतः। पाणिनिनोक्त ''छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पौऽथ पठयते। ज्योतिषमायनं चक्षुः निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।।''

छन्दः अङ्गवतः वेदस्य पादस्वरूपम्। पद्भ्यामेव शरीरिणाम्। यथा गतिर्भवति तथा छन्दसा मन्त्रात्मकवेदस्वरूपस्य निर्मितिः प्रगतिश्च भवति। व्युत्पत्तिदृष्टया छाद्यते अनेनेति छन्दः। अत्र छदि धातोः असुन् प्रत्यये शब्दोऽयं निष्पद्यते। संस्कृतसाहित्य पद्यात्मकरचनासु महाकवयः छन्दोनियमपालनं प्रधानममन्यन्त।

पद्यरचनायां छन्दोनियमस्य अनुपालनम् अतीव आवश्यकम् अमन्यन्त। यतोऽहि छन्दोभङ्गेन पद्यस्य कलेवरं न केवलं विक्रृतं भवति। विकृते च कलेवरे ''गलगण्डादियुक्ता कामिनी इव सा कविता कामिनी सहृदयहृदयं उद्वेजयति। अतः छन्दोमर्यादाः येन केनापि रूपेण पालनीयाः इति तेषां मतमासीत्। छन्दसां सम्बन्धः शृङ्गारवीरकरूणादि रसेनापि स्थापितः काव्यशास्त्रिभिः आरम्भिक कक्षासु छन्दसः लक्षणादीनां कण्ठस्थीकरणे बलं दीयते। रससस्वादमेव काव्यशिक्षणस्य प्राणभूतं तत्वं वर्तते। छन्दसः रसानुभतये छन्दसि निर्दिष्टानां गति यति इत्यादि नियमानाम् अनुपालनं काव्यपाठे समुचितरूपेण करणीयम्। काव्यपाठः सौन्दर्यानुभूत्यै प्रसिद्धो विधिः। प्रारम्भिकस्तरे काव्यपाठमाध्यमेन एवं सौंदर्य–अनुभूतिः करणीया। काव्यशिक्षणे सर्वदा सौन्दर्यानुभूतिः बोधितव्या।

ज्योति
बी०ए० तृतीय वर्ष

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे।
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब।
पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार।

– गजानन माधव मुक्तिबोध

परिणामो भयङ्करः

कश्चन महाराजः कलारसिकः काव्यप्रियश्यचासीत् । कदाचित् मगधदेशात् कश्चन कविः तस्य स्थानम् आगतवान्। स स्वस्य काव्यं श्रावयितुं महाराजस्य अनुमतिं प्रार्थितवान्। महाराजः अनुमतिं दत्तवान् कविः काव्यं श्रावितवान। वस्तुतः सः उत्तमः कविः। परन्तु तस्यं एकः दुरभ्यासः आसीतः। काव्यश्रवणसमये पुनः - पुनः सः करतलयोः कण्डूयनं करोति स्म। तदापि स तावद् वारं-वारं करोति स्म। यत् काव्यश्रोतारः तेन जुगुप्सां च ज्ञात्वा तम् उक्तवान्। - "भो! कविवर्यः। भवान् यदि चतुर्विशंति घण्टाः यावत् निरन्तरं काव्यं श्रावयति तर्हि अहं भवते पञ्चशतं ग्रामान् उपाहाररूपेण ददामि। परन्तु काव्यवाचनसमयेभवता मध्ये कदापि कण्डूयनं न करणीयम्। यद्यपि एतत् कष्टमिति जानाति स्म, तथापि कविः उपायनलोभेन अङ्गीकृतवान्। काव्यवाचनम् प्रारब्धम्। बहवः सभासदः तत्र सम्मिलिताः आसन्। कविः अपि महता उत्साहेन एव काव्यं श्रावयितुम् एव शक्तः न जातः। अतः स उपायेन वीररसपूर्णस्य काव्यस्य श्रावणव्याजेन हस्तसंचालनम् अधिकतया कुर्वन्। करतलकण्डूयनं आरब्धवान् एव। परन्तु बुद्धिमान् महाराजः झटिति तत्र ज्ञातवान्। सः कवि स्मारितवान् अपि। तदा कविः उक्तवान् - "महाराज! क्षमा करोतु। अहं कण्डूयनं विना घण्टां यावत् अपि स्थातुं नैव शक्नोमि। अतः भवान् एवं करोतु यदि अहम् एकबार कण्डूयनं करोमि तर्हि मध्यं दातव्येषु ग्रामेषु एकं ग्रामं न्यूनीकरोतु। महाराजः तत् अङ्गीकृतवान्। ततः काव्यवाचनम् अनुवृत्तम्। परन्तु चतुर्विशति घण्टात्मकः कालः यदा समाप्तः तावत् सः कविः वारं-वारं कण्डूयनं कृतवान् आसीत्। यत् तेन एकोऽपि ग्रामः उपायरूपेण नैव प्राप्तः। वस्तुतः लौकिकविषयेषु आसक्तिः अपि तादृशी एव। सकृत तत्र आसक्तिः जाता चेत् पुनः ततः मोक्षं प्राप्तुं अत्यन्त कष्टकरं भवति। अतः सा आसक्ति अपि कण्डूतिः इव त्याज्या इति वदन्ति ज्ञानिनः। कण्डूतेः करणारम्भः परिणामे भयंकरः। तथा विषयभोगोऽपि जन्ममृत्यु प्रदायकः।।

रचना

बी०ए० तृतीय वर्ष

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो
वो देवनागरी ही हो सकती है।

– जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

भारतीयसमाजे नारीणां स्थितिः

भारतीयसमाजे मानवसमाजस्य समुद्भवः नार्याः एव भवति। विश्वस्य प्राचीनतमे ग्रन्थे ऋग्वेद विवरणं प्राप्यते यत् वैदिककाले नारीणां स्थानं गौरवपूर्णमासीत्। यतः तस्मिन् काले पुत्रीणां जन्म न अशुभं मन्यते स्म, अथापि स्त्रीणां शिक्षायां, धर्मे राजनीतौ सम्पत्सु च समानाः अधिकाराः आसन्। एतेषु कर्मसु संलग्नाः एताः स्त्रियः वेदानामध्ययनेन सहैव स्ववरचयने अपि स्वतन्त्राः आसन्। यदेकेन मन्त्रेण स्फुटतया ज्ञायते –

''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्'।।

(अथर्ववेद)

वैदिककाले न केवलमृषय एवं अपितु अनेकाः विदुष्यः ऋषिका अपि मन्त्रान् प्रत्यक्षीकृतवत्यः तद्यथा – 'मैत्रेयी, गार्गी, अपाला, अदितिः, ब्रह्मवादिनी घोषा, लोपामुद्रा इत्याद्याः ऋषिकाः सुप्रसिद्धाः रोमषां एका ब्रह्मवादिनी नारी आसीत्। यया स्त्रीजगत् आद्यशक्तित्वेन प्रतिष्ठापयन्त्य अन्यायेभ्यः अत्याचारेभ्यः विमुक्तये साहसः प्रदत्तः। चस्य विवरणं ऋग्वेदस्य (1.179) सूक्ते प्राप्यते –

उपोम मे परामृश मा दभ्राणी मन्यथा । अहमस्मि

रोमशा गान्धारीणामिवाविका ।।

वैदिककाले यमी युद्धे वीरगतिं प्राप्तवती इति वर्णनं प्राप्यते। अनेन वर्णनेनैव ज्ञायते यत् तस्मिन् काले स्त्रियः युद्धादिषु अपि भागं गृह्णन्ति स्म। एवं प्रकारेण मातृत्वेन नारीणां स्थानमतीव वन्दनीयमासीत्। अतः तासां सर्वत्रैव प्रशंसा विहिता वर्तते।

मध्यकालीनयुगे (1100–1800) नारीणां स्थितौ महत् ह्रासः सम्प्राप्यते। तत्र कारणं तद्यथा मुगलशासने युद्धेषु पराजितानां राज्ञां पराधीनताकारणेन तेषां स्त्रीणामपि पराधीनत्वं भवति स्म। मुगलशासनं सुन्दरीणां नारीणां कृते अतीव भयपूर्णमासीत्। यतः तस्मिन् समये बलपूर्वकं सुन्दरीभिः सह विवाहप्रथा समारब्धा। मुगलशासकानामन्तः पुरे नगरात् संचित्य-संचित्य सुन्दर्यः स्त्रियः स्वीयान्तः पुरे संस्थाप्यन्ते स्म।

अत एव पितरौ स्वपुत्रीणां विवाहं बाल्यावस्थायामेव कुरूतः स्म। तत आरम्भ एव

बालविवाह प्रथा आरब्धा। अस्मिन् शासने स्त्रीणां सर्वेऽपि अधिकाराः समाप्ताः। ताः स्वीयमस्तित्वं प्राप्तुमपि पुरूषाणां कृपापेक्षिण्यः संवृत्ताः।

19 तमायां शताब्द्यां समाजसुधारकैः स्त्रीणां स्थित्यां परिष्काराय परिवर्त्तनाय विविधाः प्रयासाः समाचरिताः। किन्तु 20तमां शताब्दी यावत् न कश्चन परिष्कारः तासां स्थितौ सञ्जातः यथा - यथा संचारव्यवस्थायाः, संचार-साधनानां, यातायात साधनादीनां, समाचारपत्रस्य, शिक्षादीनां च साधनेषु विस्तारः समारब्धः । समाजसुधारकः राजाराममोहनरायः ईश्वरचन्द्रविद्यासागरः, स्वामिदयानन्दसदृशाः महापुरूषाः सतीप्रथायाः बालविवाहस्य च उन्मूलनाय पुनर्विवाहस्य व्यवस्थायै च आन्दोलनानि कृत्वा स्त्रीणामन्धकारमयजीवने प्रकाशमानेतुं प्रयत्नं कृतवन्तः।

मध्यकाले 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' इति वचनं विकृतमानसिक-ताया एव परिचायकम्। स्त्रीणां शिक्षायामधिकारः वेदवाक्यै रेव प्रख्याप्यते -

' यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः

ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च'।

यथा ब्राह्मणेभ्यः क्षत्रियेभ्यश्च शिक्षायाः अधिकारः वर्त्तते, तथैव शूद्राणां स्त्रीणां चापि वैदिकज्ञाने अधिकारः इत्येवं समाचचक्षिरे। स्त्रीभ्यो अपि पुरूषेभ्यः इव मौलिकाः अधिकाराः सम्प्राप्ताः। समानतायाः अधिकारः, स्वतन्त्रताधिकारः, शोषण-विरूद्धाधिकारः शिक्षायाः संस्कृतेश्चाधिकारः, संवैधानिकोपचाराणाम् अधिकारः चैत्यादयः। एतेषामधिकाराणां परिणामस्य स्वरूपेण अद्य विभिन्नक्षेत्रेषु नार्यः अपि षुरूषाः इव ख्यातिं प्राप्नुवन्ति। तद्यथा - "शिक्षायां, प्रशासने, राजनीतौ, चिकित्सायां, न्यायव्यवस्थायामित्यादिक्षेत्रेषु। परं च अद्यापि चिन्तायाः विषयः वर्त्तते यत् सम्प्रत्यपि कन्यानां भ्रूणहत्या, परिवारे नारीषु अत्याचारः बलात्कारश्च इत्यादयः समस्याः आधुनिक भारतीय समाजे व्याप्ताः वर्त्तन्ते। एतासां समस्यानां निराकरणाय अस्माभिः स्वपरिवारादेव समारभ्य प्रयासः करणीयः स्त्रीणां च शिक्षायै, सुरक्षायै, सम्मानाय च प्रयतितव्यम्। चेन अस्माकं समाजः सुव्यवस्थितः सम्पत्तिभिश्च युक्तः स्यात्।

दिव्या
एम०ए० द्वितीय वर्ष
(अंग्रेजी)

सुभाषितानि

1. सर्वेषां कल्याणकरि कामना
शुभानि वर्द्धन्ताम्।
शिवा आपः सन्तु।
शिवा ओषधयः सन्तु।
शिवा वनस्पतयः सन्तु।
अहोरात्रं शिवे स्याताम्।

2. कः केन शोभते ?
कुलवधू शीलेन शोभते।
रजनी चन्द्रेण शोभते।
नभः सूर्येण शोभते।
वनं चन्दनेन शोभते।
वल्ली कुसुमेन शोभते।
कुलं सुपुत्रेण शोभते।
मुखं ताम्बूलेन शोभते।

3. कः सज्जनः भवति ?
निद्रान्ते भगवत्स्मरणम्।
प्रातः देवानाम् अर्चनम्।
साधुपुरूषेभ्यः प्रणामः।
प्रमादात् विरामः।
सर्वस्य उपकारः।
शुचि व्यवहारः।
सत्पात्रदाने रतिः।
धर्मकार्येषु मतिः।
। इत्येषां सत्पुरूषाणां स्थितिः।

4. किं विना किं न भवति –

सूर्य विना दिनं नहि ।

पुण्यं विना सुखं नहि ।

सुपुत्रं विना कुलं नहि ।

गुरूं विना विद्या नहि ।

हृदयशुद्धिं विना धर्म नहि।

धनं विना प्रभुत्व नहि ।

दानं विना कीर्ति नहि।

भोजन विना तृप्तिः नहि।

साहसं विना मुक्तिः नहि।

ज्ञानं विना मुक्तिः नहि।

जलं विना पवित्रता नहि।

उद्यमं विना धनं नहि।

कुलस्त्रीं विना गृहं नहि।

वृष्टिं विना जीवन नहि।

बबीता
बी०ए० तृतीय वर्ष

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा-
ऽप्यर्किश्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्यासख्यमन्तर्धनम्
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः! कस्तै सह स्पर्द्धते।।

अर्थात् जिनके पास विद्यारूपी गुप्त धन है, जिसे चोर भी नहीं चुरा सकता और जिससे सदैव कल्याण की ही वृद्धि होती है। याचकों को देते रहने पर भी जो बढ़ता ही रहता है। महाप्रलय में भी जिसका नाश नहीं होता, ऐसा धन जिनके पास है, ऐसे विद्वानों का तो सदैव सम्मान करना चाहिए। हे! राजाओं अभिमानवश तुम उनकी अनदेखी मत करो, उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।

भर्तृहरि

वैदिक - ज्ञानामृतम्

1. सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् । ऋग्वेद (1.191.2
मिलकर चलो, मिलकर बोलो। तुम्हारे मन समान भाव वाले हो।

2. समानी व: आकूति: समाना हृदयानि व: । ऋग्वेद (10.191.4
तुम्हारे विचार और हृदय समान हो।

3. समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति। ऋग्वेद (10.191.4
हमारे मन और विचार एक हो।

4. मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुर्वेद (36.18)
हम एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

5. विद्ययाऽमृतमश्नुते। (ईशावास्योपनिषद)
अध्यात्मविद्या से मनुष्य अमरता को प्राप्त होता है।

6. आकूति : सत्या मनसो मे अस्तु। (अर्थर्ववेद 5.3.4)
मेरे मन के संकल्प सत्य सिद्ध हो।

7. सरस्वती साधयन्ती धिय: न (ऋग्वेद 2.3.8)
माँ सरस्वती, हमारी बुद्धियों को पुष्ट करें।

8. सरस्वतयभि नो नेषि वस्य:। (ऋग्वेद 6.61.14)
हे सरस्वति। हमें अभ्युदय की ओर ले जाओ।

9. रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव। (ऋग्वेद 6.47.18)
संसार के सारे रूपों में उस ईश का रूप समाया हुआ है।

मोनिका
बी०ए० तृतीय व

विचारणीया : श्लोका:

1. वरमेको गुणी पुत्र: न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्र: तमो हन्ति, न च तारागणोऽपि च।।

2. नमामि ईश्वरं प्रात: नमामि जनकं तथा ।
नमामि जननीं पूज्यां नमामि शिक्षकान् तथा ।।

3. हस्तस्य भूषणं दानं, सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं, भूषणै: किं प्रयोजनम्।।

4. अयं निज: परोवेति, गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

5. आलस्यं हिं मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वाऽयं नावसीदति ।।

6. विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्ति: परेषां परपीडनाय ।
खलस्य साधो: विपरीतमेतत्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।

7. अधमा: धनमिच्छान्ति, धनमानौ च मध्यमा: ।
उत्तमा: मानमिच्छन्ति, मानो हि महता धनम् ।।

8. हंस: श्वेत: बक: श्वेत:, क: भेद बकहंसयो:।
नीरक्षीरविवेके तु, हंसो हंस: बको बक: ।।

9. शशिना शोभते रक्त: सृष्टि: सूर्येण शोभते।
सत्येन शोभते वाणी:, सदाचारेण जीवनम् ।।

10. वृथा वृष्टि: समुद्रेषु, वृथा तृप्तेषु भोजनम् ।
वृथा दानं धनाढ्येषु, वृथा दीपो दिवापि च ।।

योगिता
बी०ए० प्रथम वर्ष

सुशोभते भारतभूमि :

तपोभूमि: कर्मभूमिश्च अयं संसारो मे मते ।
कर्माणि करोति इहागत्य पुन: पुन: मानव: ।।
हिन्दी पद्यानुवाद – कर्मभूमि तपोभूमि है यह संसार ।
कर्म करते मानव यहां आकर बारम्बार ।।

महान् अस्माकं भारतवर्षम् महान: ऋषय: चास्य ।
सुशोभते तै: भारतभूमि: ऋषि भूमिश्च कथते ।
हिन्दी पद्यानुवाद – महान् हमारा भारतवर्ष महान है इसके ऋषि ।
इन्ही से सुशोभित भारतधरा ऋषि भूमि कहलाती तभी ।

सुमन सुरमितपावन: पवन: संतप्ततापपमपाकरोति हि
अस्य पावनस्थलस्पर्श प्राप्य प्रवहति पादपान् विकम्पयन्
हिन्दी पद्यानुवाद – पुष्प सुवासित वायु जब इसका स्पर्श करें ।
वृक्षो को हिलाकर, संतप्तो के ताप हरे ।।

परभृतकूकै: पुष्परसलुब्धै: भ्रमरै: सर्वत्र ।
प्रदीपमानतानशुभ्रयश: प्रसरति यत्र ।।
हिन्दी पद्यानुवाद – कोयल की कूक और भ्रमरों की तान से मिला ।
जिसका यश फैल रहा यहां और वहां ।।

वैज्ञानिके भौतिके युगे क: तापस: ।
युगे तु दृश्यन्ते लोलुपा : ।।
हिन्दी पद्यानुवाद – तपस्वी कौन कहलाए इस भौतिक युग में ।
दिखाई देते है लालची ही इस युग में

ददाति उत्कर्षाय स्वयोगदानं करोत्यापत्काले च साहाय्यम् स एव प्रशंसनीय: परम् तापस: इह वास्तविक: ।।
हिन्दी पद्यानुवाद – उन्नति में दे अपना योगदान आपति में करे सहयोग ।
वही प्रशंसनीय महनीय तपस्वी भी तभी ।

अंजली
बी०ए० तृतीय वर्ष

आधुनिक भारतस्य जागरणे स्वामी विवेकानन्दस्य भूमिका

स्वामी विवेकानन्दः आधुनिक – भारतस्य गौरवः आसीत्। स्वामी विवेकानन्दः समाजस्य कुप्रथाः दर्शयित्वा ताः दूरीकरणार्थ जीवनपर्यन्तं प्रयत्नं अकरोत्। तस्मिन् समये भारतीय समाजे अनेक-कुप्रथाः व्याप्ताः आसन यथा सती – प्रथा बाल – विवाहः इत्योदयः अंग्रेजाः भारतीयान् प्रति अनुचित – व्यवहारम् अकुर्वन् तदा विवेकानन्दः भारतस्य नागरिकान् देशस्य महानतयाः धर्मस्य समाजिक – स्थितिस्य च ज्ञानम् अकरोत्। स्वामिनः विवेकानन्दस्य एकाः उद्देश्य आसीत् देशस्य उन्नतिः।

स्वामी विवेकानंदः जाति व्यवस्थायाः विरोधी आसीत् स्वामी विवेकानन्दानुसारः कोऽपि उच्चः निम्न न अस्ति वरन् सर्वे जनाः ब्राह्मणः शूद्राः वा समानाः सन्ति।

स्वामी विवेकानन्दः लोक शिक्षायाः प्रचार-प्रसारं च अकरोत् सः कथयति यत् भारतवर्षस्य यत् मुष्टिका मात्र जनाः देशस्य सम्पूर्ण – शिक्षा प्रणाली अधिकत्वा चदा वयं पुनः उन्नतिं कर्तुम् इच्छामः तदा वयं जनेषु शिक्षायाः प्रचार-प्रसारं च करणेन पूर्व भाँति भवितुं शक्नुमः।

स्वामी विवेकानन्दः स्त्री शिक्षायाः प्रबल-समर्थकः आसीत् तत्कालीन समाजे स्त्री दशाः अत्यंत लज्जाजनकः आसीत्। स्वामी विवेकानन्दः स्त्रीदशां पुनरूत्थापनार्थ बहुप्रयत्नं अकरोत् यथा सः पर्दा – प्रयां दूरी अकरोत् । सार्वजनिक – जीवनस्य प्रतिस्पर्धाया मांग कुर्तं प्रेरणा अदत्तम् च स्त्री शिक्षा हेतु अत्यधिकं प्रयत्नं अकरोत्। विवेकानन्दानुसारः स्त्रीष्णां लज्जा – जनकः स्थितिणः यत् स्त्रीयां शिक्षायाः आत्मनिर्भरतायाः च न्यूनता आसीत् ।

स्वामी विवेकानन्दः बाल – विवाहस्य अपि विरूद्ध आसीत्। तदतिरिक्तं विवेकानन्दः दलित - वर्गस्य उद्धारं कर्तुम् । दलित वर्गस्य सामाजिक स्थितिं उच्चं कर्तुम् हेतु देशवासिणः मिशनरिणः च प्रेरणा अददत्।

उपरोक्त विवरणेन स्पष्टमस्ति यत् स्वामी विवेकानन्दः आधुनिक भारतस्य जागरणे प्रवर्तकस्य भूमिकायाः निर्वाह अकरोत्। एतस्मिन् तस्य योगदानं स्पष्टम् परिलक्षितम् अद्य अस्माभिः सर्वे भारतीय – समाजस्य विकास प्रक्रिया विवेकानन्द सदृशान् समाज – सुधारकान् विना असंभवः अस्ति।

उपासना
बी०ए० तृतीय वर्ष

English Section - Ramneek (2017-18)

Editor - Yogita Bajaj
Assistant Professor (Department of English)

Student Editor - Divya Rathee
MA-II (English)

Editorial	**Yogita Bajaj,** Assistant Professor (Department of English)
1. Education our Damsels	Divya Rathi, MA-II (English)
2. The Future is Electronic. Its radio, television and the internet; its not really newspapers anymore	Swati Sharma, MA-II (English
3. Let's Start Talking Again	Veena Sindhu, Asst. Prof. (Dept. of Eng.)
4. Turn it Round	Dr. Ritu Tomer Rathi, Asst. Prof. (Dept. of English)
5. Teen Pregnancy	Pooja Kashyap, B.Sc.-II (Computer Science)
6. Disconnect to Connect	Prerna Jain, MA-II (English)
7. Need for Education Reforms	Preeti Gahlot, MA-II (English)
8. Women Empowerment	Diya Sharma, MA-II (English)
9. A Fariy's Cry	Divya Rathee, MA-II (English)
10. What is Life All About	Anjali, MA-II (English)

Editorial

The creation, accumulation and dissemination of knowledge has brought human beings to their present state of advancement. Passing on the knowledge is as important as its creation because human beings are social animals. Story telling is as old as civilization itself because this was the only way through which our ancestors used to communicate. Story telling has been an essential component of oral literature like jest, proverbs, folk tales, moral fables, mini sagas and sketches.

During the last two decades relation between literature and technology has evolved; technology not only effects the medium through which story is told but the opportunity to co create on a global scale; what do these changes mean for the story telling? Can the purpose of the story remain the same. Developing technologies have allowed stories to be shared with an ever increasing audience. As technology have evolved, so too have the media through which the stories can be shared. So many old stories like thirsty crow, lion and the mouse, hare and the tortoise etc. is available on you tube and google with much animation and characters and themes. Audience is directly involved in the process by liking or disliking. Attention span of the young kids is so less that they are not interested in listening to the full story; moreover, any information is just a fingertip away from them. The whole paradigm has shifted from wisdom, honesty, bravery, courage, celebration of life and joy to leadership skills smartness, self assertion and self-obsession. Yesterday I received a message on social media where a three-minute story animation named "Joy of giving" has been nominated for Oscar. The short story has been fashioned at times by technological advances and constantly has seen its popularity ebb and flow with the vagaries of evolving media. Since last decade the advent of digital media has actually brought an epidemic to swell, people are spending triple of their time in front of screens that is why more than a trillion pages are added on world wide web and this grows by several billions a day". Today our lives are illuminated by five million digital screens and world have migrated from wood pulp to pixels on computers, phones, laptops, readers and tablets. In a time poor environment, technology can help us to connect with this form of literature in a better way one can enjoy it while waiting for a bus or in a queue etc. Actually innovations from kindle to smart phone and ideo games have just changed the world. Nancy K. Bahm book personal connections in digital age really touched me because it looks at "how quickly and effectively people took over the network of digital signals that were meant for sociability in the service of our need to connect".

Yogita Bajaj
Assistant Professor
(Department of English)

Educating our Damsels

Solaring above the clouds with the whole world at your wingtips,
Flying over the vast oceans, diving into the deep seas,
Being lifted to greatest heights, enjoying all basic rights,
Inside us beating a heart which desires to filled with pride,
Let us enjoy education, our birth right.

Our girls walk miles each day to school, study for hours each night and stand stro against those who say they are unworthy of an education. If they are prepared to ma those sacrifices, the global community should be able to summon the resources to he them fulfil theirs promise. By keeping girls in school, we provide them with a bet chance for safety and security, to health and education and to make their own li choices and decisions. Limited access to quality education and families' prioritizati of boys' rather than girls' education-in part because of limited job opportunitie contribute to perpetuate the practice of not giving importance to girl educatio Educated girls are less likely to be victims of domestic and sexual violence. **A handf of warmth, a hearth full of love and providing education to girls will help them fl like doves.**

Girls' education goes beyond getting girls into school, It is also about ensurin that girls learn and fell safe while in school; complete all levels of education with th skills to effectively compete in the labour market; learn the socio-emotional and li skills necessary to navigate and adapt to a changing world; make decisions about the own lives; and contribute to their communities and the world. Better educated gir tend to be healthier, participate more in the formal labour market, earn higher incomes have fewer children, marry at a later age, and enable better health care and educatio for their children.

India is bestowed with innumerable talents. We have eminent singers wh make us proud in singing and music industry, there are bold ones who are soci activities and leaders, many are leading pilots and mountain climbers. Some ar excellent designers and fantastic chefs and there are brilliant teachers. All of them ar diligent and have obtained excellence in their professions. Until and unless girls wi be deprived of opportunities, they will become victims to various evils. Our Prim Minister has left no stone unturned to educate girl child. He introduced the schem "BETI BACHAO, BETI PADHAO" which highlights the basic need of educatin every single girl and to save her from being killed considering her as a liability.

The best way to ensure quality education for all children is to eliminate th barriers that keep girls out of the classroom. The challaenge is a daunting one an requires more than just one organisation to tackle it on a whole.

Listen my cry, listen my scream, Let me fulfil my wishes and dreams

Student Editor
Divya Rathee
M.A.-II (English

"The future is electronic. It's radio, television and the internet; it's not really newspapers anymore."

We are living in digital technology age now and it's about time we put away the old stuff. In the electronic age we see ourselves being translated more and more into the form of information, moving towards the technological extension of consciousness. Kids today are growing up absolutely immersed in electronic media. At even a tender age they watch videos, use computers, youtube, facebook & whatsapp. Electronic media has become part and parcel of our life.

Research has revealed that media are responsible for influencing a major part of our daily life. Media contribute to a transformation in the cultural and social values of the masses. Media bring about a transformation in the attitudes and beliefs of the people.

Electronic media is the media which uses electronics or electromechanical energy for the audience to access the content. Video recording, audio recording, multimedia presentations, CD-ROM and online content are all forms of electronic media and any equipment used in electronic communication process such as radio, television, desktop computers, laptops, electronic whiteboards, and electronic textbooks is also considered as electronic media.

Even one's own home is kind of anthology of advertisers, manufacturers, motifs and presentation techniques. There's nothing 'natural' about one's home these days. The furnishings, the fabrics, the furniture, the appliances, the TV, and all the electronic equipment - we're living inside commercials.

We live in a society in which spurious realities are manufactured by eh media, by governments, by big corporations, by religious groups, political groups. I ask, in my writing, 'What is real?' Because unceasingly we are bombarded with pseudo realities manufactured by very sophisticated people using very sophisticated electronic mechanisms. The development efforts taken by radio and television in the context of rural India need to be mentioned. Some recent experiments in television have successfully helped in transforming lives of the rural people. For instance, TV programmes on health, agriculture, employment, especially those produced by Doordarshan, have created awareness among people and motivated efforts for upliftmen of the deprived in society. Programmes have inspired people to tackle illness and disease and other problems in society.

But at places we are dehumanising ourselves by losing human values and by taking the modern electronic age so seriously that even kids have lost the fun of learning rhymes and listening those fairytales and panchtantra stories from their grandparents.

Swati Sharma
M.A.-II (English)

Let's Start Talking Again

Recently I came across an article 'Let's Start Talking Again, and it set me thinking. In spite of all the so called technology- face book, face time, twitter, whatsapp etc. Do we really fell connected to our loved ones? We have many acquaintances, collegues and friends. We are a part of many groups on social media but - true friends???

Relationships seem to have become shallow and superficial and our conversations mundane. We prefer to chat, send messages and stay connected through our smart phones, but shy away from face to face conversations. With hundreds of people in our contact list and thousands of messages (usually forwarded) pouring in and the constant desire to check our message box, withdraws us from the real people surrounding us. A very common sight is to see two people sitting across or side by side each absorbed in his/her mobile rather than with each other.

So we see that though MAN is becoming increasingly social online, he is actually becoming a loner, avoiding direct contact with people. In an attempt to conceal his vulnerability, he finds that he has none in whom he can confide in or with whom he can express himself entirely. Children can be seen bottling up their stress and the young their anxiety and fear, leading to increase in mental illness and depression. The alarming rise in incidents of suicide especially of the youngs is an indication of breaking relationships and lack of communication. Our previous generations did not face the problems of modern age, namely depression, anxiety and stress to the same extent, as they had each other to hold hands and listen. Most importantly they talked to each other.

Emotions await just a release; so effort should be made to create and nurture quality personal relationships. Such relationships help us stay healthy, happy and feeling loved. They provide a support system that helps us deal with stress and difficult life experiences. They help us in combating depression and creating a general feeling of well being. It is rightly said.

"Whenever you are not feeling well without any reason, spend time with someone special in your life."

So it's high time we moved away from the virtual setting to real life relations and friendships. It's time to put our mobiles aside and create conversations where we can pour our hearts out, be ourselves and say anything we feel like without the fear of rejection or judgment.

Veena Sindhu
Assistant Professor
Department of English

Turn it Round

One pleasant morning, Nalini packed her bag with a few eatables and a water bottle. She kept her doubts aside and decided to visit her sisters by public transport though she knew that it meant a travel of around five hours. She took an auto to the metro station and then secured a seat for herself in the train. Life seemed to have become mobi-centric to her. All the people in metro were busy and in fact engrossed in their mobiles. They seemed to have dived in the small pool of ten to twelve inches screen. She disembarked the train and moved towards ISBT, New Delhi. She asked at the counter, "Sir, when is the next bus for Karnal scheduled?" The conducted seemed confused and after a few minutes told her that the bus is scheduled after 20 minutes and the ticket counter will be open after 15 minutes. Nalini, felt relaxed and moved to the washroom. She came back to the counter within five minutes but to her utter surprise found a long queue before the counter. She, instantly, joined the queue. The Conducter shared a few glances with her and later signalled to her. Nalini was a bit apprehensive with that signal but went forward. What was more astonishing for Nalini was that the Conductor remarked, "Madam, it has been for the first time that the passenger has spoken respectfully." She thanked him and boarded the bus...

Friends, in our life we always point finger at others, just try and move it round by 180 degree. You will find where we stand. All the relation bound words like, "Bhaiya, Aunt, Uncle etc." pinch us deep if others use them for us. Others too are hurt when we call them like this.

Works of all kind and all levels are equal and demand equal respect from all.

Dr. Ritu Tomer Rathi
Assistant Professor
Department of English

Who wants to become a writer? And why? Because it's the answer to everything. ... It's the streaming reason for living. To note, to pin down, to build up, to create, to be astonished at nothing, to cherish the oddities, to let nothing go down the drain, to make something, to make a great flower out of life, even if it's a cactus."

—Enid Bagnold

Teen Pregnancy

Everyday we hear about many issues related to girls which should not be there in our society. It may be female foeticide, child marriage, gender inequality or many other issues. Among all these hazardous issues that affect the life of a girl or we can say the issue which destroys a girls' life is teen pregnancy. According to the Indian Government data, three out of every 100 women (3.10%), who delivered kids in Delhi in 2016, were below the age of 20.

One in three adolescent girls have experienced physical, sexual and emotional violence and 13% have experienced forced sexual intercourse or another form of sexual act in the country. This problem is usually defined when a girl is not fully matured neither physically nor mentally prepared to be a mother gives birth to a child. It is sometimes forced or sometimes consensual. This leads to various problems in a girl's life. High fertility and discontinued education after marriage remain the other aspects of concern but the greatest threat is higher rate of pregnancy-related complications, leading to high morality. At this age, a girls' reproductive organs start to develop. A girl can now give birth to a baby but her body is not fully prepared. If in this age a girl gives birth to a baby, this depletes her health. Sometimes it leads to death. Younger women are at higher risk of developing anemia and hypertension if they get pregnant. It increases the risk of mortality too.

Forced sex could be because of rape or sexual abuse. Some girls usually don't take a stand even if they are sexually abused. Sometimes their peer group is also responsible for this as they force them to be addicted with drugs or alcohol. Girl's lack confidence to raise voice or to talk about all this to any elder. Not only are the girls responsible for this but their parents and teachers are also responsible for this. Parents and teachers should have an open communication about sex with their young ones. They should teach their young ones about good and bad touch and also make them comfortable to share all their problems. But instead of talking they even ignore this topic by considering it a taboo. Government has also released Saathiya or peer educator resource kit which aims to train adolescents to share correct information about sexual health with their peers. This topic should be made a part of syllabus so that each and every child should be aware of what is good for their health and what is bad.

Pooja Kashyap
B.Sc.-II (Computer Science)

Disconnect to Connect

As the day comes to an end, night sets in and duties of our monotonous lives take a halt, we often wonder 'Are we really content'? Do the day's activities really make my heart sing and mind happy? Life is a mad rush from one day to another, past to present to future, where our deepest desires, fantasies take a backseat, where our routine lives offer nothing; leaving us empty hearted, its only after we have retired that other minds turn to things that we had all longed for whole our lives, but then the train has already left long time back !

Invest in yourselves to a point where it makes others want to invest in you

Benjamin Franklin

All our lives we wait for those free moments of weekends where we can plant ur own veggie garden or decorate that little hidden library of ours. But ALAS! our ruel lives do not permit us with so much liberty at our disposal. The younger version f ourselves is always indulging in making money, not making memories! fulfilling esponsibilities and working 9 to 5. Is that what humans were made for? To study, work nd then earn, thereafter dying an inevitable death! Many of us compromise on our reams for our parents, children and job, regardless of the fact that investment in neself is possibly the best when it comes to getting interests.

Whether its investing in learning a new skill, developing yourself personally nd professionally, tapping into your creative energies, you need to give yourself efore you give to others. It is our responsibility to take time to develop our talents and ifts so that we can serve others better which is the highest form of self love.

There are many interesting ways to invest in yourself. You will be surprised ow fun solitude can be and you can relax, spending quality time with yourself for ourself :-

- Start your own veggie and herb garden
- Cooking something new which you never have before
- Visiting a new art gallery
- Making a list about how you feel
- Going for a walk into the nature
- Holding a movie night for yourself
- Listening to a new artist you have never before
- Reading a new book
- Decorating or reinventing your room decor

- Dressing up as your favorite movie character
- Adding spunky new elements to your wardrobe
- Gifting yourself your favorite flowers
- Donating your old books and clothes to charity
- Write a letter to your future self
- Indulging in your favorite dessert
- Pen down your thoughts in a journal
- Light up a candle and talk to the stars
- Write a gratitude list

As you progress with these amazing self indulgence remedies, your happiness quotient would increase manifold and your ability to serve others and find meaning, purpose in your lives find a way to your heart,

THE BEST PROJECT YOU EVER ON WORK IS YOU

Choosing happiness over anything and above everything will cure almost each struggle of ongoing circumstances. 'Most people are about as happy as they make up their minds to be'- Abraham Lincoln. Because investing in yourself emotionally, physically, spirtually, financially will allow you to become best version of yourself. When you are the best version of yourself, you will be an attraction magnet to others. Taking care of your health, fueling your body with right supplements and nutrients with daily exercise regime will not only keep you fit but give you the required confidence in right amounts too.

The statistics show that about 75% people in this world are not happy with their professional as well as personal life because honestly they are tired of giving up their everything to social pressures that they end up with little or no time for themselves which makes them frustrated and restless towards life driving them to commit suicide. Japan which is one of the most technologically advanced and developed countries of the world has one of the most highest life expectancy levels in the world. Here average age years is 101. It is the happiest country because of its pacing higher importance to self love and time to oneself. Japanese people are the most life loving and hard working people around the globe. Countries all over the world are soon recognizing the value of self worth and its impact on the society at large as it leads to greater productivity in society That why more and more MNC's are promoting healthy and hobby indulgence sessions for their employees which increases their happiness quotient and promotes their mental peace and improves their overall well being because an happy individual makes a blissfull society at large.

Sometimes the best investment that we do,
Were not really considered as by us in first place

\- Warren Buffet

The ability to detach from time to time from people gives us power to motivate our within and keeping ourselves alive and going on, coming back refreshed from our own state of aloofness and spreading love, joy and care, warmth which we originally all inherit deep in ourselves. Appreciating even the smallest gesture of others and complimenting them for their goodness can reap highest forms of happiness in return. So before we all invest in stock exchange for our secure monatery future, lets all invest in ourselves for our happier self.

Prerna Jain
MA-II (English)

When I sit down to write a book, I do not say to myself, 'I am going to produce a work of art.' I write it because there is some lie that I want to expose, some fact to which I want to draw attention, and my initial concern is to get a hearing."

—George Orwell

"Writing a book is a horrible, exhausting struggle, like a long bout of some painful illness. One would never undertake such a thing if one were not driven on by some demon whom one can neither resist nor understand."

—George Orwell

Need for Education Reforms

Education gives creativity,
Creativity leads to thinking,
Thinking provides knowledge,
Knowledge makes you great..

Education is the backbone of a country's progress. If we want to reach real peace in this world, we should start improving the standards of education. A small step is a giant leap for mankind so the beginning must be done with little works which can bring, huge wonders. Our system of education has often been criticised as outdated but nobody wants to go to the depth and really understand the reasons why this is happening. The only need is to make the system of education realistic, descriptive and relevant so that it can contribute to the development of mankind.

Education not only means to send the kids to school and make them cram all question and answers chapterwise because this only makes them book worms which is not beneficial for the child education means the overall development in the personality and behaviour of the child. Now a days the only aim of the parents is to send their child to the most expensive schools which leave no stone unturned to provide the facilities to the child but parent has no time to keep a check upon what system of learning is going on between the child and the teacher.

Cramming of text books must be replaced by innovative learning environment as well as social learning. This will not only help to shape the child's brain but also bring about the best in the child. The government must support the poor children who are keen to study because **sometimes the most innovative minds can only be found on the last bench. The quality of education must be improved and strengthened in order to bring about the best from the budding talents of our youth.**

Preeti Gahlot
MA-II (English)

A poet is, before anything else, a person who is passionately in love with language.

—W.H. Auden

Women Empowerment

No golden weights can turn the scale of justice in his sight and what is wrong in women's life, in men's cannot be right

Women !! Mentally and biologically the strongest gender prevailing on the planet but on the grounds of physical power, they are overpowered by males. There is no aspect in proving women's weak side when compared to men but to numerous reasons like HISTORY! SOCIETY! SOCIAL STATUS! people find "n" number of reasons of reasons to put them down and overpower them.

We must not forget that many of the world's greatest personalities have been woman, whether it be Smt. Indira Gandhi and Dr. Kiran Bedi as social and political leaders, Rani Laxmi bai and rani Padmavati as freedom fighters, Kalpna Chawla and Sunita Williams as astronauts, Lata Mangeshkar as the nightingale of India. They have played a vital role in every field. Males, take away any point of time and see that the word would have been better place to live in if we provide more authority and power to women.

Women have always been the bearers of male dominance and violence but we need to bring permanent hange in it. They can excel in all fields if they are provided with ample number of opportunities. Suppressing them is the biggest mistake of the this society because it is a male dominated society .

women are the teabags whose potentials cannot be brought out until dipped in an ocean full of hot water of Opportunities.

Both species carry their burden and play their role in their own way. Their is no logic of comparing them. Nature has burdened them with different roles and responsibilities.

Diya Sharma
MA-II (English)

"The poet's job is to put into words those feelings we all have that are so deep, so important, and yet so difficult to name, to tell the truth in such a beautiful way, that people cannot live without it."

—Jane Jenyon

A FAIRY's CRY

Don't kill her save from the worldly protocol,
For she is a fairy, a Barbie doll.

No golden weights can turn the scale of justice in His sight
And what is wrong in women's life, in men's cannot be right.

A girl is a sister, daughter, friends and mother,
The world lies only in her fall on the ground.

Her magnificent feet will turn you around,
Hold her, don's let her fall on the ground.

One day she decided she was fierce, brave and stronger,
Unless the world graved her beautiful laughter.

She will not cry even when she is hungry,
She will never give you a chance to be angry.

Let me live! Let me shine! Let me smile!
For you and I together have to travel miles and miles!

She pleads to every human on this earth-
When the morning sun is rising and the breeze has left the sea.
When you are thinking all about yourselves,
Will you sometimes Think of me??

Divya Rathee
MA-II (English)

What is life all about?

Life is not about finding yourself. It's about creating yourself !!

From killing the entire day doing nothing, then studying like ghosts all night.
From endless gossip about everything in life, to silly worthless fights;
From sharing late night maggi, to unplanned nightouts;
From an unknown creepy monster, to a lifelong partner;
From bunking the classes, to late night movies;
Life is really simple but we tend to make it complicated.;

"SOULMATE" ...? They asked...
"ROOMMATE"...I replied.........
A place where we learnt a lot of things and how to canduct ourselves.

Life is a journey, not a destination.
Mellow doesn't always make for a good story, but it makes for a good life.
In the end, its not the years in your life that count, it's the life in your years.
Cherish every moment and enjoy your life....

Anjali
MA-II (English)

...writer is born with a repertory company in his head. Shakespeare has ...aps 20 players. ... I have 10 or so, and that's a lot. As you get older, you ...me more skillful at casting them."

—Gore Vidal

हिन्दी–अनुभाग – रमणीक 2017–18

सम्पादिका - डॉ० सुनीता श्योराण
एसोसियट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग

छात्र सम्पादिका - काजल तिवारी
बी.ए.-III (हिंदी ऑनर्स)

सम्पादकीय	डॉ० सुनीता श्योराण, एसोसियट प्रोफेसर, हिन्दी-वि...
1. क्यों पढ़ें हम हिन्दी ?	काजल तिवारी, बी.ए.-III (हिंदी ऑनर्स)
2. तू कौन है ?	एकता, बी.ए.-I
3. बचपन बचाओ आन्दोलन	मुक्ति गुप्त, बी.ए.-I
4. वक्त नहीं	रिया गुप्त, बी.ए. I
5. दहलीज गाँव के घर की	हिमानी परमार, बी.एससी.-II (मेडिकल)
6. सच्चाई	शिवानी, बी.ए.-II (हिंदी ऑनर्स)
7. जिन्दगी आसान है	चाँदनी
8. सीता की अग्नि-परीक्षा	नूतन कुमारी
9. अंधों को दर्पण क्या देना	शिवानी, बी.ए.-III
10. तीन रंग	गीता, बी.ए.-III (हिंदी ऑनर्स)
11. बच्चे के निर्माण की अभिव्यक्ति है पिता	अंकिता सैनी, बी.ए.-II (हिंदी ऑनर्स)
12. नारी की आवाज	लक्ष्मी, बी.ए.-I
13. बेटी की आवाज	ईशा नागल, बी.ए.-I
14. कीमती	लक्ष्मी, बी.ए.-I
15. भारतीय नारी	अंकिता, बी.एससी.-III
16. भारतीय किसान	विनती यादव, बी.एससी (Comp. Sc.)-III
17. नारी की आत्मा	खुशबू, बी.ए.-I (हिन्दी ऑनर्स)
18. मेरे हिस्से में माँ आई	मानसी मिश्र, बी.ए.-I
19. उड़ सकती हूँ मैं	मानसी मिश्र, बी.ए.-I

	डॉ० पुष्पा अंतिल, एसोसियट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
आज का मानव	डॉ० पुष्पा अंतिल, एसोसियट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
लिखूँ किस पर	डॉ० अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
हाइकु	मंजु रानी, एम.कॉम-I
जीवन एक संघर्ष	शालू यादव, बी.कॉम-III
महँगाई	शिवानी, बी.ए.-I
बेटियाँ	हेमलता, बी.कॉम-III
आदर्श विद्यार्थी	पायल तंवर, बी.कॉम-II
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	गार्गी, बी.कॉम-I
ग्लोबल वार्मिंग	कोमल उपाध्याय, बी.कॉम-III
आरक्षण	डॉ0 अमितेश बोकन, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
समर्पण	

सम्पादकीय

सभी गुणों की डोरी धैर्य से बंधी हुई है। संकल्प को चरितार्थ करने हेतु धैर्य की आवश्यकता होती है। धैर्य न होने के कारण हम सांसारिक सुखों की ओर मुड जाते हैं। यदि ज्ञानपूर्वक धैर्य के संकल्प में कठिनाईयां आती हैं तो उस समय शांत व मौन रहना हितकर होगा। दु:ख के पहाड़ बलवान सहन नहीं कर सकते, कमजोर धैर्य की शक्ति के कारण सहन कर जाते हैं। मौन, धैर्य, आत्मबल एवं आत्मविश्वास ही सफलता का मूलमंत्र है।

मौन जीवन में शक्ति संचय का श्रेष्ठ अनुष्ठान है। अनेक समस्याओं का समाधान है, शक्ति का दूसरा नाम है। मौन से सहनशीलता जाग्रत होती है जिससे क्रोध शांत होता है विचारों के मंथन में मौन प्रभावकारी है। इससे संकल्पशक्ति और मनोबल की वृद्धि होती है। मौन से एकाग्रता का उदय होने पर ध्येय तक पहुँचने के लिए सरलता रहती है। मौन अभिव्यक्ति किसी बड़े व्याख्यान से कम नहीं है। इससे भाषा के शुभ संस्कार उत्पन्न होते है, अहंकार समाप्त होता है। दिव्य भाषा के रूप में मौन सृष्टि के आरम्भ से ही प्रभावी रहा है।

प्रत्येक विद्यार्थी को यह अनुभव करना चाहिए कि वह एक ऐसी अवधि से गुजर रहा है जो उसके भविष्य निर्माण करने में एक निर्णायक भूमिका अदा करती है। विद्यार्थी जीवन में परिवर्तनशील परिस्थितियाँ आती है, लेकिन उन्हें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, विवेक नहीं खोना चाहिए। धैर्य एवं आत्मविश्वास रखें। संयमित रूप से परिश्रम करते हुए लक्ष्य प्राप्ति के लिए सतत् प्रयास करते रहें। माता-पिता एवं गुरुओं की बातों को ध्यानपूर्वक सुनें एवं अपनाएँ। हर परिस्थिति में शांत एवं स्थिर रहें। उत्तम लोगों की कार्यशैली, कुशलता एवं व्यवहार से सीख लें।

धैर्य के अभाव में ज्ञान का अभाव रहता है। ज्ञान के अभाव से आवेश जन्म लेता है। आवेश के कारण हम दिशाहीन हो जाते हैं इसलिए हमें धैर्य रखना चाहिए।धैर्य एवं सक्रियता सही दिशा की ओर बढ़ाते हैं। इसलिए जीवन के इन विभिन्न अंगों को अपनाते हुए आगे बढ़कर सार्थकता प्राप्त की जा सकती है।

व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास स्वस्थ इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है। शिक्षा से व्यक्तित्व परिष्कृत होता है। जितनी शिक्षा हम पाते हैं यदि उस का थोड़ा-सा अंश भी अपने आचरण में अमल करें तो निश्चित रूप से यह चरित्र-निर्माण की दिशा में सार्थक कदम होगा।

शुभकामनाओं सहित

डॉ० सुनीता श्योराण

क्यों पढ़ें हम हिंदी?

भाषा के नाम पर आज प्रश्न उठ रहा है कि हम हिंदी क्यों पढ़े? आजकल जब चारों ओर ग्रेजी पढ़ने-पढ़ाने पर बल दिया जा रहा है तब हम हिंदी क्यों पढ़ें? हिंदी पढ़ने का लाभ क्या है? या हिंदी पढ़े बिना हमारा काम नहीं चल सकता? तमाम तरह के सवालों से घिरे होने के बाद भी हिंदी भाषा अपनी जिजिविषा, संजीवता और अभिव्यक्ति-सामर्थ्य के कारण सारे देश की राष्ट्रभाषा बनी हुई है। हिंदी राष्ट्रभाषा के साथ-साथ राजभाषा भी हैं। स्वतंत्रता मिलने पर संविधान सभा ने एकमत से यह स्वीकार किया- "संघ की राष्ट्रभाषा हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी होगी।" हिंदी को राजभाषा भी बनाया गया, पर 15 वर्षों तक अंग्रेजी के प्रयोग की छूट भी दी गई। जब हिंदी राष्ट्रभाषा बन गई तब प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य हो जाता है कि वह हिंदी सीखे-पढ़े। हिंदी पढ़ने के पक्ष में निम्नलिखित तर्क भी दिए जा सकते हैं-

हिंदी भारत के सर्वाधिक लोगों के व्यवहार की भाषा है।

यह एक वैज्ञानिक भाषा है।

इसे को अल्प प्रयास से सीखा और समझाा जा सकता है।

हिंदी में जो लिखा जाता है, वही पढ़ा तथा समझा जाता है।

हिंदी हमारे गौरव व संस्कृति को अभिव्यक्त करने वाली भाषा है।

प्राय: हिंदी पर यह आरोप लगाया जाता है कि हिंदी क्लिष्ट भाषा है। वैसे इस आरोप में अधिक दम नहीं है, फिर भी हिंदी को सरल बनाने की आवश्यकता है। इसे जीवंत भाषा बनाना होगा। इसे संपर्क भाषा बनाने के लिए लचीला, सहज और सरल बनाने की भी आवश्यकता है। बदलती परिस्थितियों के अनुरूप इसमें अन्य भाषाओं की शब्दावली को भी स्वीकार करने की आवश्यकता है।

प्रत्येक देश की पहचान उसकी भाषा से ही होती है। भारत की पहचान भी हिंदी से ही है क्योंकि यही भाषा अधिकांश लोगों द्वारा प्रयोग में लाई जाती है। हिंदी के प्रयोग से हमारे अंदर आत्मसम्मान की भावना जागृत होती है। हिंदी को किसी धर्म विशेष के साथ जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। हिंदी हिन्दुस्तान की भाषा है। यदि हिंदी अपने ही देश में नहीं पढ़ी जाएगी तो यह विश्व में सम्मान कैसे पा सकेगी? सभी शंकाओं को दूर करके हमें हिंदी पढ़नी ही चाहिए।

काजल तिवारी
कक्षा- बी.ए. तृतीय वर्ष (हिंदी ऑनर्स)

तू कौन है?

भारत एक सपने देखने वालों का देश है। कोई सपना देखता है अभिनेता होने का तो कोई प्रोफेसर बनने का। ऐसे लोगों के लिए 'तरक्की' नाम का एक शिखर है जिसका प्रत्येक पाया नुकीला है अर्थात् इस शिखर की चोटी तक पहुँचने के लिए राहगीर को अनेक चुनौतियों का सामना करना होता है। वे चुनौतियाँ जिसमें राही को संसार की मोहमाया से दूर रहना होता है, भौतिक कष्ट, पर्याप्त भोजन की अप्राप्ति, सामाजिक यातनाएँ, प्रकृति के बदलते रूप आदि का सामना करना होता है। लेकिन अधिकतर राहगीरों को मैने डर कर भागते देखा है, वो इसीलिए क्योंकि, प्रथम परीक्षा यानि मोहमाया की परीक्षा में असफल हो जाते हैं इसलिए मजबूरी में चोरी या कत्ल करते हैं।

बहुत लंबे समय से मेरी नजरें एक सच्चे राही को ढूँढते हुए कश्मीर की उस 15 साल की लड़की पर जा रूकी। वह शिखर से नीचे एक छोर पर खड़ी थी। उसकी नजरें कभी शिखर की ओर देखती तो क्षण भर के लिए दूर खड़े अपने परिवार की ओर। उसे ऐसा करते देख तो ऐसा मालूम हो सका कि शायद उस के फैसले में विवेक की कमी थी। आसपास के लोगों ने बताया कि उस बच्ची में काबिलियत, की कोई कमी नहीं थी और परिवार की तरफ से कोई बंदिशें भी नहीं थी। उसकी परेशानी समाज में फैले आतंकियों की धमकी थी। वसीम 'मुस्लिम धर्म' से संबंध रखती थी, यही कारण था कि आतंकी उसे आगे नहीं बढ़ने देना चाहते थे। एक गहरी सोच में गुम वह बच्ची इस मुश्किल से निकलने के प्रयास पर विचार कर रही थी, कोई समाधान न मिलने पर, आँखों से निकलते उन आँसूओं के कारण को कुछ इन शब्दों में जाहिर करने लगी-

''डर लगता है सपनों से, कर दे ना ये तबाह

मै कौन हूँ.......

मैं आग हूँ या राख हूँ,

मैं दाग हूँ या चाँद हूँ,

मैं कौन हूँ

मैं बूँद हूँ या हूँ लहर.......''

-सामाजिक यातनाएँ उसके मन में नकारात्मकता का रूप ले चुकी थी जिसके कारण वह अस्तित्व पर भी सवाल उठाने लगी.... उस के दर्द का उत्तर इन शब्दों में छिपा है-

"जो राख है तू
ले ज़मीं से उड़, हवा है तेरे संग
तू बह उस के संग, अपना तू काम दिखा
आँसू जो होगें, उनकी आँखों में
तेरे काम के होगे,
और अगर जो आग है तू, तो दिल भी उनके जलेंगे।
जो दाग है तू
तो वो दाग बन जो चाँद की खूबसूरती को बढ़ाता है
और चाँद है तू, तो वो चाँद बन
जो दाग बिना अधूरा कहलाता है।
जो बूँद है तू
तो वो बूँद बन जिससे सागर
सागर बन पाता है,
जो अगर लहर है तू
तो वह लहर बन,
जिसकी इज्जत दुनिया करती है।
जो भी है तू, खुद को कम ना समझ
तेरी अपनी ताकत है बहुत बड़ी,
निडर, तू आगे बढ़।"

एकता

कक्षा- बी.ए. (प्रथम वर्ष)

बचपन बचाओ आंदोलन

यूँ तो बहुत से लोग आते–जाते रास्ते में भीख माँगते बच्चों, बाल मजदूरों और दुकानों पर काम करते हुए बाल–मजदूरों से मिलते हैं, पर क्या कोई उनकी इस हालत पर विचार करता है? बहुतों का जवाब ना ही होगा। पर एक ऐसे व्यक्ति भी हैं जिनके मन में ये बात चुभी और 1980 में उन्होंने 'बचपन बचाओ आंदोलन' की शुरूआत की। वह व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी हैं, जोकि अब तक 80 हजार से अधिक मासूमों के जीवन को तबाह होने से बचा चुके हैं।

उनका मानना है कि बाल मजदूरी एक बीमारी नहीं है, बल्कि कई बीमारियों की जड़ है। इसके कारण कई जिंदगियाँ बर्बाद होती है। इसी कारण कैलाश सत्यार्थी ने इन बच्चों को इस अभिशाप से मुक्ति दिलाना ही अपनी जिंदगी का मकसद बना लिया।

इस आंदोलन का मकसद है बच्चों के लिए अनुकूल समाज बनाना जहाँ बच्चे शोषणमुक्त हों और अच्छी शिक्षा प्राप्त करें। यह आंदोलन आज भारत के 15 प्रदेशों के 200 से अधिक जिलों में सक्रिय है। इसमें लगभग 70,000 स्वयंसेवक हैं जो लगातार मासूमों के जीवन में खुशियों के रंग भरने के लिए कार्यरत हैं।

एक आंकलन के मुताबिक साल 2013 में मानव तस्करी के 1199 मुकदमें दर्ज हुए जिनमें से 10 प्रतिशत मामले "बचपन बचाओ आंदोलन" के प्रयासों से दर्ज किए गए थे। इस आंदोलन में कैलाश के दो साथी भी शहीद हो चुके हैं। कैलाश सत्यार्थी ने ना केवल बच्चों को मुक्त कराया बल्कि बाल मजदूरी को खत्म करने के लिए मजबूत कानून की जोरदार मांग की। 1998 में 103 देशों से गुजरने वाली 'बाल श्रम विरोधी विश्व यात्रा' का आयोजन और नेतृत्व भी कैलाश ने किया।

हाल ही में कौन बनेगा करोड़पति में कैलाश सत्यार्थी जी अपनी पत्नी सुमेधा कैलाश के साथ आए। उनके सुविचार और उच्च विचारों ने हर भारतीय को प्रेरित किया कि हम बाल मजदूरी, बाल शोषण और अन्य अपराधों से बच्चों को मुक्त कराने का युद्ध लड़े।

उन्होंने कहा कि "जब तक बच्चों का बचपन सुरक्षित नहीं है, तब तक भारत का भविष्य सुरक्षित नहीं है।"

मुक्ति गुप्ता
कक्षा– बी.ए. (प्रथम वर्ष)

'वक्त नहीं '

हर खुशी है लोगों के दामन में
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं।

दिन-रात दौड़ती दुनिया में
ज़िन्दगी के लिए वक्त नहीं।

माँ की लोरी का एहसास तो है
पर माँ को माँ कहने के लिए वक्त नहीं।

सारे रिश्तों को तो हम मार चुके
अब उन्हें दफनाने के लिए वक्त नहीं।

सारे नाम मोबाइल में हैं
पर दोस्तों के लिए वक्त नहीं।

गैरों की क्या बात करें
जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं।

पैसों की दौड़ में हम ऐसा दौड़े
कि थकने के लिए भी वक्त नहीं।

आँखों में है नींद बड़ी
पर सोने के लिए वक्त नहीं।

दिल है गमों से भरा हुआ
पर रोने के लिए वक्त नहीं।

पराए एहसानों की क्या कद्र करें
जब अपने सपने के लिए ही वक्त नहीं।

रिया गुप्त
कक्षा- बी.ए. (प्रथम वर्ष)

दहलीज गाँव के घर की

लाँघ रही हूँ दहलीज
गाँव के घर की
बावजूद सबके विरोध के
लड़की हूँ न ?
आगे है कई लक्ष्मण रेखाएँ
तुम्हारे भरोसे हूँ ईश्वर !
तुम संग हो।
पता है मुझे
रुढ़ियाँ, ढकोसले पीछा न छोड़ेंगे
जानती हूँ यह भी
माँ–बाबा सुनेंगे ताने
बैठेंगे बिरादरी में
चोरों की तरह,
सुनेंगे राय सबकी दबे होंठ।
हाथ की ओट में,
होगी फुसफुसाहट, सुगबुगाहट
क्योंकि, उनकी बेटी
बजाय घर बसाने के
पढ़ने चली है शहर।
एक पहलू.....
आगे संग है डर !
अपरिचित चेहरे, अपरिचित रास्ते–गलियाँ
घूरती आँखे, आशंका, गरीबी
ढेरों सवाल ?
मिटानी है रात–दिन की रेखा
खरा उतरना है अजनबियों में,
अपनों के लिए।
काँपता मन मंजिल तो कहां,
रास्ता ढूँढने की उधेड़बुन
अकेले स्वयं से हारना,
कुंडी लगा दीवारों संग
लिपट, जी भर रो लेना, हल्का होना।
स्वयं ही जीतना
बाहरी हौसला,
किसी को तो तोड़नी होगी रीत
संयम रख
निष्ठुर समाज के लिए
बनी निष्ठुर।
इसलिए की लाँघ चुकी हूँ
दहलीज गाँव के घर की।

हिमानी परमा
कक्षा– बी.एससी. (द्वितीय वर्ष

सच्चाई

माँगों तो अपने रब से माँगो,
जो दे तो रहमत और न दे तो किस्मत,
लेकिन दुनिया से हरगिज मत माँगना,
क्योंकि दे तो एहसान और न दे तो शर्मिंदगी।

लक्ष्य के बिना जीवन, बिना पता, लिखे
लिफाफे की तरह है जो कहीं नहीं पहुँचता।

क्रोध और आँधी दोनो बराबर हैं, शाँत होने के
बाद ही पता चलता है कि कितना नुकसान हुआ है।

वाणी को वीणा बनायें, बाण नहीं।

आप अपनी समस्याओं का कारण और निवारण स्वयं हैं।

आप यदि समय के साथ चलोगे, तो बहुत आगे तक जा पाओगे।
यदि अपने समय को ही अनदेखा किया, तो फिर पिछड़ते और पछताते ही रह जाओगे।

निंदा और चुगली करने वाला व्यक्ति उस चमगादड़ के समान है जो जिस मुख से खाता है उसी से मल भी त्याग करता है।

इंसान मकान बदलता है, वस्त्र बदलता है, सम्बन्ध बदलता है, फिर भी दु:खी रहता है क्योंकि वह अपना स्वभाव नहीं बदलता।

पुरानी कटु बात को बार–बार सोचने का अर्थ है कि हमने भूतकाल की मुर्दा घटना को इस बात का रास्ता दे दिया कि वह हमारे आज और कल दोनों को खराब करें। हम सावधान हो जाएँ, मुर्दों को अपने जीवन में हस्तक्षेप न करने दें।

दर्पण की तरह जियो जिसमें स्वागत सबका हो लेकिन, संग्रह किसी का नहीं।

समय, सेहत और सम्बन्ध – इन तीनों पर कीमत का लेबल नहीं लगा होता है, लेकिन जब हम इन्हें खो देते हैं तब इनकी कीमत का अहसास होता है।

- दुआ कभी साथ नहीं छोड़ती और बद्दुआ कभी पीछा नहीं छोड़ती।

- शाँत जीभ कई समस्याओं से किनारा करा सकती है, परन्तु मुस्कुराते हुए होंठ तो परिस्थितियों को किनारे लगा देते हैं। सोचो! जहाँ से दर्द पैदा होता है (जीभ), उसी के पास उस दर्द की दवा (मुस्कान) भी होती है।

- बुरे के साथ बुरा बनने में अपनी अच्छाई का नाश क्यों करते हो? पानी के रास्ते में यदि चट्टान खड़ी हो तो वह दो हिस्सों में बँटकर चट्टान के दोनों तरफ से पार हो जाता है और आगे पुन: एक हो जाता है।

- "जो प्राप्त है" वो ही "पर्याप्त" है इन तीन शब्दों में सुख बेहिसाब है।

- किसी की भी जिंदगी कभी आसान नहीं होती, इसे आसान बनाना पड़ता है, कुछ नजरअंदाज करके और कुछ बर्दाश्त करके। कोहरे से एक अच्छी बात सीखने को मिली कि जब जीवन में रास्ता न दिखाई दे रहा हो तो, बहुत ज्यादा दूर देखने की कोशिश व्यर्थ है। एक-एक कदम चलते चलिये, रास्ता स्वयं खुलता जाएगा।

- विज्ञान कहता है – "जीभ पर लगी चोट सबसे जल्दी ठीक हो जाती है।" लेकिन ज्ञान कहता है कि– "जीभ से लगी चोट कभी भी ठीक नहीं होती।"

- जिस दिन तुम्हारे कारण तुम्हारे माँ–बाप की आँखों में आँसू आ गये, याद रखना उस दिन तुम्हारे द्वारा किया गया सारा धर्म–कर्म उनके आँसुओं में बह जाएगा।

- जब भी कोई झूठ बोलता है तो वह यह नहीं जानता कि वह अपने ऊपर कितना बड़ा दायित्व लेने जा रहा है, क्योंकि एक बार बोले गए झूठ को निभाने के लिए उसे बीस बार और झूठ बोलना पड़ सकता है।

- शरीर की हैसियत एक मुट्ठी भर राख से ज्यादा नहीं है। जिस दिन चिता पर चढ़ गया, समझ लो घंटे भर में सब कुछ स्वाहा हो जाएगा। अपने सुन्दर शरीर पर ज्यादा मत अकड़ना। याद रखना साथ कुछ नहीं जाता है, सिवाय पाप–पुण्य की गठरी के।

जिन्दगी आसान है

न लेना और देना तो आसान है।
करे जीवन में धारण वही देव समान है।

जो चलता ज्ञान–दिशा में, वही तो महान है।
रहती उसके लबों पर हमेशा ही मुस्कान है।

हीं समझता जो ज्ञान को, वही परेशान है।
जन्दगी तो परिस्थितियों से भरा तूफान है।

'तूफान को जो समझे तोहफा'
जीत जाता जहान है।

अन्दर है करुणा का गुण, तभी तू इंसान है।
नहीं तो विकारों से भरा, केवल तू हैवान है।

'जिंदगी' ईश्वर का दिया हुआ वरदान है।
प्यार से मुस्कुरा दिया कर,
जिंदगी असान है।

चाँदनी

सीता की अग्नि-परीक्षा

जब सीता का आता है ध्यान
कई सवाल करते परेशान
कोई देता क्यूँ नहीं,
इस तरफ भी ध्यान।
देश निकाला राम का था
वो फिर भी जाती साथ है
मखमल पर सोने वाली
सोती घास पर हर रात है।
उसका कसूर इतना ही था
वो लाँघ गई एक खींची लकीर
क्या पता था साधु के रूप में
कोई रावण आएगा।
भेष बदलकर,
सीता का अपहरण कर ले जाएगा।
एक अनोखी अनहोनी की मार से
वो जा बैठी अग्निद्वार पे
क्या उसके तन में खोट है,
या मन में कोई और है?
ये अग्नि परीक्षा जो हुई
वो इसी बात की सोच है।
वो रही पराए देश में
क्या राम था स्वदेश में?
ये लोक-लाज-इज्जत का झण्डा
सिर्फ औरत पर ही क्यों तने
इन नियमों की बेड़ियों में
मर्द भी क्यों न बंधे?

नूतन कुमारी

अंधों को दर्पण क्या देना

अंधों को दर्पण क्या देना, बहरों को भजन सुनाना क्या,
जो रक्तपात करते उनको, गंगा का नीर पिलाना क्या,
हमने जिनको दो आँखे दी, वो हमको आँख दिखा बैठे,
हम शांति-यज्ञ में लगे रहे, वो श्वेत कबूतर खा बैठे,
वो छल पर छल करता आया, हम अड़े रहे विश्वासों पर,
कितने समझौते थोप दिए, हमने बेटों की लाशों पर,
अब लाशें भी यह बोल उठी, मत अंतर्मन पर घात करो,
दुश्मन जो भाषा समझ सके, अब उस भाषा में बात करो,
वो झाड़ी है, हम बरगद हैं, वो हैं बबूल, हम चंदन हैं,
वो है जमात गीदड़ वाली, हम सिंहों का अभिनन्दन हैं,
ऐ पाक ! तुम्हारी धमकी से, यह धारा नहीं डरने वाली,
यह अमर सनातन माटी है, ये कभी नहीं मने वाली,
तुम भूल गए सन अड़तालिस, पैदा होते ही अकड़े थे,
हम उन कबायली बकरों की गर्दन हाथों से पकड़े थे,
तुम भूल गए सन पैंसठ को तुमने पंगा कर डाला था,
छोटे से लाल बहादुर ने तुमको नंगा कर डाला था,
तुम भूल गए सन इकहत्तर को, जब तुम ढाका पर ऐंठे थे,
नब्बे हजार पाकिस्तानी, घुटनों के बल पर बैठे थे,
तुम सारी दुर्गति भूल गए, फिर से बवाल कर बैठे हो,
है उत्तर खुद के पास नहीं हमसे सवाल कर बैठे हो,
बिगड़ैल किसी बच्चे जैसे आलाप तुम्हारे लगते हैं,
तुम भूल गए हो रिश्ते में, हम बाप तुम्हारे लगते हैं,
तेरी बर्बादी में खुद को बर्बाद नहीं होने देंगे,
हम भारत माँ के सीने में जेहाद नहीं होने देंगे,
तू रख हथियार उधारी के, हम अपने दम से लड़ लेंगे,
अगर ऐटम बम से लड़ना हो तो, ऐटम बम से लड़ लेंगे,
जबतक तू बटन दबायेगा, हम पृथ्वी, नाग चला देंगे,
तू जब तक दिल्ली ढूँढेगा, हम पूरा पाक जला देंगे।

शिवानी
कक्षा- बी.ए. (तृतीय वर्ष)

तीन रंग

यूँ तो यारों इस जहाँ में अनेकों रंग हैं,
पर इन तीन रंगों का कुछ और ही ढंग है।

एक रंग हरियाली का प्रतीक है,
दूसरा रंग शांति का द्वीप है।

तीसरा रंग कहता बलिदान की कहानी है,
इसमें छिपी हुई लोगों की कुर्बानी है।

ये तीनों रंग एक महान देश की निशानी है,
जिसकी महानता पूरे विश्व ने मानी है।

गी
कक्षा– बी.ए. (तृतीय व
हिन्दी ऑ

कदली सीप भुजंग–मुख, स्वाति एक गुन तीन ।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।

– रहीम

बच्चे के निर्माण की अभिव्यक्ति है पिता

पिता जीवन है सम्बल है शक्ति है
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है।
पिता उंगली पकड़े बच्चे का सहारा है
पिता कभी कुछ खट्टा कभी खारा है।
पिता पालन है पोषण है, परिवार का अनुशासन है
पिता धौंस से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है।
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है
पिता छोटे से परिन्दे का बड़ा आसमान है।
पिता अप्रदर्शित अनन्त प्यार है
पिता है तो बच्चों का इन्तजार है।
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं
पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं।
पिता से परिवार में प्रतिपल राग है
पिता से ही मां की बिन्दी और सुहाग है।
पिता परमात्मा की जगत के प्रति आसक्ति है
पिता गृहस्थ आश्रम में उच्च स्थिति की भक्ति है।
पिता अपनी इच्छाओं का अनन्त और परिवार की पूर्ति है
पिता खत में दिये हुए संस्कार की मूर्ति है।
पिता एक जीवन को जीवन का दान है
पिता दुनिया दिखाने का एहसान है।
पिता सुरक्षा है अगर सिर पर हाथ है
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है।
तो पिता से बड़ा तुम अपना नाम करो
पिता का अपमान नहीं उन पर अभिमान करो।
क्योंकि माँ-बाप की कमी तो कोई बांट नहीं सकता
और ईश्वर भी इनके आशीषों को काट नहीं सकता।
विश्व में किसी भी तीर्थ की यात्रायें व्यर्थ है
यदि बेटे के होते माँ-बाप असमर्थ है।
वह खुशनसीब है माँ-बाप जिनके साथ होते हैं
क्योंकि माँ-बाप के आशीषों के हजारों हाथ होते हैं।

अंकिता सैनी
कक्षा- बी.ए., द्वितीय वर्ष (हिंदी ऑनर्स)

नारी की आवाज़

❖ वह कहता था,
वह सुनती थी,
जारी था एक खेल
कहने-सुनने का।

❖ खेल में थी दो पर्चियाँ।
एक में लिखा था 'कहो'
एक में लिखा था 'सुनो'

❖ अब यह नियति थी
या महज संयोग!
उसके हाथ लगती रही वही पर्ची
जिस पर लिखा था 'सुनो'।

❖ वह सुनती रही।
उसने सुने आदेश।
उसने सुने उपदेश।
बन्दिशें उसके लिए थीं।
उसके लिए थी वर्जनाएँ।
वह जानती थी,
'कहना -सुनना'
नहीं है केवल क्रियाएँ।

❖ राजा ने कहा, 'जहर पियो'
वह 'मीरा' हो गई।

❖ ऋषि ने कहा, 'पत्थर बनो'
वह 'अहिल्या' हो गई।

❖ प्रभु ने कहा, 'निकल जाओ'
वह 'सीता' हो गई।

❖ चिता से निकली 'चीख',
किन्ही कानों ने नहीं सुनी।
वह 'सती' हो गई।

❖ घुटती रही उसकी फरियाद,
अटके रहे शब्द,
सिले रहे होंठ,
रुन्धा रहा गला।
उसके हाथ कभी नहीं लगी वह पर्ची,
जिस पर लिखा था, 'कहो'।

लक्ष्मी
कक्षा- बी.ए. (प्रथम वर्ष)

बेटी की आवाज़

कभी मन में यह विचार आता है कि,
कियों को लड़कों से कम क्यूँ समझा जाता है ?

ों को कुल का वंश समझा जाता है तो
कियों को बोझ क्यों समझा जाता है ?

ों का पढ़ना-लिखना सही समझा जाता है तो
कियों को पढ़ना-लिखना गलत क्यों समझा जाता है ?

कों के पैदा होने पर खुशी मनाई जाती है तो
कियों के पैदा होने पर शोक क्यों मनाया जाता है ?

कियों को घर से बाहर निकलने से रोका जाता है तो
कों को घर से बाहर निकलते समय
दा में रहना क्यों नहीं सिखाया जाता है ?

न हूँ- दुःखी हूँ- इस आजाद देश में इस छोटी सोच को बढ़ावा क्यों दिया जाता है ?

ब जरूरत है इस संकीर्ण सोच को बदलने की
ब हर किसी को जगना होगा और हर एक को जगाना होगा।
हुत खो लिया नारी ने अब उसको हक दिलाना होगा।
त्रियों को खुद इसकी शुरूआत करनी होगी।
त्रियों को खुद, स्वयं को आगे बढ़ाना होगा
उम्मीद है जल्द ही हालात बदलेंगे
उम्मीद है अब वक्त करवट लेगा
और नहीं रहेगी किसी स्त्री के चेहरे पर सिकन।

ईशा नागल
कक्षा- बी.ए. (प्रथम वर्ष)

कीमती

हर्षद के लिए धन,
तेंदुलकर के लिए रन,

शाहरूख के लिए एक्टिंग,
टाईसन के लिए बॉक्सिंग,

छात्रों के लिए शिक्षा,
याचकों के लिए भिक्षा,

कपिल के लिए खेल,
अपराधी के लिए जेल,

अमेरिका के लिए लड़ाई,
पर हम बच्चों के लिए,

सिर्फ पढ़ाई ही पढ़ाई।

लक्ष्मी
कक्षा– बी.ए. (प्रथम वर्ष)

रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित–अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।

– रहीम

भारतीय नारी

मैं एक नारी हूँ प्रेम चाहती हूँ और कुछ नहीं.....
मैं एक नारी हूँ, मैं सब संभाल लेती हूँ!!
हर मुश्किल में खुद को उबार लेती हूँ।

नहीं मिलता वक्त घर गृहस्थी में.....
फिर भी अपने लिए वक्त निकाल लेती हूँ!!

टूटी होती हूँ अन्दर से कई बार मैं.....
पर सबकी खुशी के लिए मुस्कुरा लेती हूँ!!

गलत ना होके भी ठहराई जाती हूँ गलत.....
घर की शांति के लिए मैं चुप्पी साध लेती हूँ!!

सच्चाई के लिए लड़ती हूँ सदा मैं.....
अपनों को जिताने के लिए हार मान लेती हूँ!!

व्यस्त हैं सब प्यार का इजहार नहीं करते.....
पर मैं फिर भी सबके दिल की बात जान लेती हूँ!!

कहीं नजर न लग जाये मेरी अपनी ही.....
इसलिए पति बच्चों की नजर उतार लेती हूँ!!

बहुत थक जाती हूँ कभी-कभी.....
पति के कंधों पर सर रख थकान उतार लेती हूँ!!

जीवनसाथी के संग-संग चल अपने सपने संवार लेती हूँ.....
अपनी ही खुशियों के लिए अपना सब कुछ वार देती हूँ!!

नहीं सहा जाता जब दर्द और खुशियाँ.....
तब अपनी भावनाओं को कागज पर उतार लेती हूँ!!

अंकिता
कक्षा- बी.एससी. (तृतीय वर्ष)

'भारतीय किसान'

खून पसीना बहाकर,
करता जो सबका कल्याण है
दिन-रात एक करके,
भोजन करता प्रदान है
हिम्मत मेहनत लगन से,
जो करता हर एक काम है
वही भारतीय किसान है।

हे भारत माता ! ये कैसा कलयुक है आया ?
भारत के किसानों पर कैसा है अँधेरा छाया ?
भारतीय किसान जो है हमारे अन्नदाता
उन्हें ही एक समृद्ध जीवन नहीं मिल पाता।

जो मेहनत करके भरता है देश का पेट
वही किसान गया है अब अर्थी पर लेट
हाड़-माँस के ये पुतले जो कर रहे हैं चमत्कार
सरकार व लोगों का इनके प्रति बढ़ रहा है अनाचार
क्यों हो रहा है इन पर अत्याचार।
भारतवासियों ! दोहराओ फिर वही इतिहास
लाल बहादुर शास्त्री की सोच का करो एहसास
बोलो ! जय जवान जय किसान
कृषक ही है सबसे महान।

विनती यादव
कक्षा- बी.एस.सी. (तृतीय वर्ष)

नारी की आत्मा

पहला दृश्य.....
एक कवि नदी के किनारे खड़ा था!
तभी वहाँ से एक लड़की का शव
नदी में तैरता दिया उसे दिखाई
कवि ने उस शव से पूछा.....

कौन हो तुम सुकुमारी ?
बह रही नदी के जल में।
कोई तो होगा तेरा अपना,
मानव निर्मित इस भू-तल में!

किस घर की तुम बेटी हो,
किस क्यारी की कली हो तुम ?
किसने तुमको छला है बोलो,
क्यों दुनिया छोड़ चली हो तुम ?

किसके नाम की मेंहदी बोलो,
हाथों पर रची है तेरे ?
बोलो किसके नाम की बिंदिया,
माँथे पर लगी है तेरे ?

उपमा रहित ये रूप तुम्हारा,
ये रूप कहाँ से लायी हो ?

दूसरा दृश्य.....
कवि की बातें सुनकर
लड़की की आत्मा बोली .....

कविराज मुझको क्षमा करो,
गरीब पिता की बेटी हूँ!
इसलिए मृत मीन की भांति,
जल धारा पर लेटी हूँ!

रूप-रंग और सुन्दरता ही,
मेरी पहचान बताते हैं!
कंगन, चूड़ी, बिंदी, मेंहदी,
सुहागन मुझे बनाते हैं!

पिता के सुख को सुख समझा,
पिता के दु:ख में दु:खी थी मैं!
जीवन के इस तन्हा पथ पर,
पति के संग चली थी मैं!

पति को मैंने दीपक समझा,
उसकी लौ में जली थी मैं!
माता-पिता का साथ छोड़,
उसके रंग में ढली थी मैं!

पर वो निकला सौदागर,
लगा दिया मेरा भी मोल!
दौलत और दहेज की खातिर,
पिला दिया जल में विष घोल!

दुनिया रूपी इस उपवन में,
छोटी से एक कली थी मैं!
जिस को माली समझा,
उसी के द्वारा छली थी मैं!

ईश्वर से अब न्याय मांगने,
शव शैय्या पर पड़ी हूँ मैं!
दहेज के लोभी इस संसार में,
दहेज की भेंट चढ़ी हूँ मैं!
दहेज की भेंट चढ़ी हूँ मैं!!

खुशबू
कक्षा- बी.ए. (प्रथम वर्ष)

मेरे हिस्से में माँ आई

सिर फिरे लोग हमें दुश्मने-जाँ कहते हैं,
हम जो इस मुल्क की मिट्टी को भी माँ कहते हैं।

मुझे बस इसलिए अच्छी बहार लगती हैं,
कि ये भी माँ की तरह खुशनुम्हार लगती हैं।

लबों पे उस के कभी बद्दुआ नहीं होती,
बस एक माँ है जो मुझसे खफा नहीं होती।

अभी जिन्दा है मेरी माँ, मुझे कुछ नहीं होगा,
मैं जब घर से निकलती हूँ, उसकी दुआ साथ चलती हैं।

जब भी कश्ती मेरे सैलाब में आ जाती है,
माँ दुआ करती हुई मेरे ख्वाब में आ जाती है।

इस तरह मेरे गुनाहों को वो धो देती है,
माँ बहुत गुस्से में होती हैं तो रो देती है।

किसी को घर मिला हिस्से में और किसी को दुकान आई,
मैं घर में सबसे छोटा था मेरे हिस्से में माँ आई

मेरी ख्वाहिश है मैं फिर से फरिश्ता हो जाऊँ,
माँ से इस तरह लिपट जाऊँ कि बच्चा हो जाऊँ।

फिक्र में बच्चों की कुछ इस कदर घुल जाती है माँ,
नौजवां होते हुए बूढ़ी नजर आती है माँ।

रूह के इस रिश्ते की गहराई तो देखिए,
चोट लगती है हमें और सिसकती है माँ।

कब जरूरत मेरे बच्चों को हो मेरी ? इतना सोचकर,
सो जाती है उसकी आँखें और जागती रहती है माँ।

र कष्ट से बच्चों को बचाने के लिए,
ल बनती है कभी, तलवार बन जाती है माँ।

न्दगी के सफर में गर्दिशों की धूप में,
ब कोई साया नहीं मिलता तो याद आती है माँ।

र हो जाती है घर जाने में अक्सर हमें,
न पर हो मछली ऐसे घबराती है माँ।

क्रिया कभी हो ही नहीं सकता उसका अदा,
ते-मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ।

उड़ सकती हूँ मैं

लों से खुशबू चुरा सकती हूँ मैं,
ही कुछ लिखते-लिखते इतिहास भी रच सकती हूँ मैं।

ह लूँ तो उस आसमां को भी छू सकती हूँ मैं,
ब लेना कभी आसमां पर बिना पंखों के,
दलों के संग भी उड़ सकती हूँ मैं।

त बन जाऊँ किसी की— उसे हर मुश्किल से जीतना सिखा सकती हूँ मैं।
म्मा तो वो रखती हूँ कि पार पर्वत भी कर सकती हूँ मैं।

भी देखना सागर की गहराइयों में लहरों के साथ गहराइयों को भी छू सकती हूँ मैं।
द पर आ जाऊँ तो पत्थर भी बन सकती हूँ मैं,
त सको तो प्यार से जीत लो प्यार में सब कुछ हार सकती हूँ मैं।

ही कुछ लिखते-लिखते इतिहास भी रच सकती हूँ मैं।

मानसी मिश्र
कक्षा- बी.ए. (प्रथम वर्ष)

आज का मानव

आज का मानव
लगभग दानव
हिंसक, क्रूर, लोभी
असत्यवादी और ढोंगी
छल ही जिसका धर्म
क्या जाने वह जीवन–मर्म
नाते–रिश्ते जिसके लिए बोझ
स्वार्थ में लिप्त है वह रोज
आए दिन अखबार की सुर्खियों में हम पाते
किस तरह संपत्ति हेतु कुचले जाते हैं नाते
नहीं सुन पाते जो सगे भाई की चीख
क्या देंगे वो आने वाली पीढ़ी को सीख
परिवार का टूटन, समाज का बिखराव
मूल्यों का विघटन और जीवन सत्यों का घाव
मानव–मानसिकता है आज घायल
जिसका था कभी समस्त ब्रह्माण्ड कायल
प्राणियों में श्रेष्ठ होकर भी जो आज नीचे
चला जा रहा है मानव लोचन मीचे
परिणाम की न सुध, अन्त की न परवाह
जिसके मन में केवल आगे बढ़ने की चाह
परमपिता परमात्मा से मेरी विनती है यही
मानव को दिखाए राह है जो सही।

डॉ० पुष्पा अंतिल
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी–विभाग

लिखूँ किस पर

...खने को उठाती हूँ जब कलम
...रुक-सा जाता है
...दर मन में कुछ टूट-सा जाता है
...त कठिन है
...य का चयन
...ई मृगनयनी या
...ई भीगे नयन
...खूँ इतिहास पर या आज पर
...सी साज पर या
...ी हुई आवाज पर
...है बहुत भारी
...ो है लाचारी
...-कहीं मृत्यु पर है जीवन भारी
...े चेहरे के पीछे रूदन
...पाँव पर टूटा मन
...ु आगे बढ़के ही जीवन
...में आया ये विचार
...ा अपने से साक्षात्कार
...ने को कलम है उठाई
...चुप, पर है भावों की गहराई
...लिए लिखने को उठाती हूँ जब भी कलम
...रुक-सा जाता है
...मन में कुछ टूट सा जाता है।

डॉ० पुष्पा अंतिल
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी-विभाग

हाइकु

1. जाम ही जाम
यही है गुरुग्राम
नहीं आराम

2. दीपक जले
बहन का थाल सजे
त्योहार मने

3. हैं गूढ़ बातें
सोचकर कहना
अपनी बातें

4. मन–पखेरू
तन एक पिंजरा
कब उड़ेगा

5. साथी न संगी
मनुष्य लेता सेल्फी
पड़ा अकेला

6. सहेजें जल
जल ही तो जीवन
देता जीवन

7. बेराजगारी
बढ़ाती है बीमारी
सब पे भारी

8. बैंक में खाता
बरसात मे छाता
सबको भाता

9. पास हों मित्र
कष्ट रफूचक्कर
अटल मित्र

10. देर से सोना
देर से ही उठना
रोग बुलाना

डॉ० अशोक कुमार
सहायक प्रोफेसर
हिंदी-विभाग

जीवन : एक संघर्ष

खुद पर है भरोसा सबसे ज्यादा
मुश्किल से मुश्किल को करना है आसान।
जब संघर्ष करते रहेंगे तो जीत हमारी होगी,
लड़ते रहो खुद से बाधा खुद ही दूर होगी।

यही तो संघर्ष है इसे ही तो पाना है
जीवन ही जीना नहीं, संघर्ष भी जीना है
संघर्ष ही तो कामयाबी है।

यदि एक बार हार गए तो क्या...
दोबारा जीत हमारी है
संघर्ष ही तो जीवन का सत्य है,
संघर्ष से ही तो जीत प्रत्यक्ष है।

ब कुछ संभव हो सकता है,
गर हम में हो संघर्ष की भावना।
द्भुत है यह संघर्ष।

मंजु रानी
कक्षा- एम.कॉम (प्रथम वर्ष)

महँगाई

उफ्फ ! ये महँगाई
किसने ये बढ़ाई
प्याज की कीमत देखकर
सबकी शामत आई
पहले चलते थे पैसे, अब रूपये चलते हैं
चीजें मिलती थीं सस्ती अब महँगी मिलती है
एक रूपये की दाल, अब सौ रूपये की हो गई
ना जाने अब खाने की शुद्धता कहाँ खो गई

कोई तो आए, महँगाई को घटाए
हाय (अब) इस महँगाई से हमारी जान छुड़ाए

आज की चीजों के दाम देखकर, अब हम चक्कर खाए
अगर कोई बच जाए तो उसकी जेब कट जाए

विदेशों की चीजें जो
मिलती देश को महँगी
इससे बेहतर तो ये है
कि खुद देश करे तरक्की।

मैं भी मोदी जी के साथ
'मेक इन इंडिया' से जुड़ जाऊँगी
ऐसी चीजें जो खूब चले
अपने देश में बनाऊँगी।

शालू यादव
कक्षा- बी.कॉम (तृतीय वर्ष)

बेटियाँ

कोई चेहरा है कोमल कली का,
रूप कोई सलोनी परी का।
इनसे सीखा सबक जिंदगी का,
बेटियाँ तो हैं लम्हा खुशी का।

ये अगर हैं तो रोशन जहाँ है,
ये जमीनें हैं और आसमां हैं।
है वजूद इनसे ही आदमी का,
बेटियाँ तो हैं लम्हा खुशी का।

हमने रब को तो देखा नहीं पर,
नूर ये हैं खुदा का जमीं पर।
एक एहसास है रोशनी का,
बेटियाँ तो हैं लम्हा खुशी का।

इनसे इनकी अदाएँ न छीनों,
इनसे इनकी सदाएँ न छीनों।
हक इन्हें भी तो है जिंदगी का,
बेटियाँ तो हैं लम्हा खुशी का।
बेटियाँ तो हैं लम्हा खुशी का।

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

शिवानी
कक्षा– बी.ए. (प्रथम वर्ष)

आदर्श विद्यार्थी

आदर्श विद्यार्थी का अर्थ ऐसे विद्यार्थी से है जिसका व्यवहार, आचरण एवं दूसरे विद्यार्थियों के लिए उदाहरण बने। विद्यार्थी ही देश का भविष्य होते हैं। यदि आदर्शवादी होंगे तो देश का भविष्य भी उज्जवल होगा। एक राष्ट्र की ऊँचाइयों का आधार विद्यार्थी ही होते हैं, इसलिए विद्यार्थी का ईमानदार, सत्यवादी, आशावादी एवं कर्तव्यनिष्ठ जरूरी है। विद्यार्थी वह नहीं है जो पढ़ाई में अच्छा हो या अच्छे अंक लाता हो, बल्कि साथ-साथ उसमें सभी गुण होने चाहिए। वही विद्यार्थी आदर्श कहलाने का अधिकारी है जो में तो अच्छा है ही, इसके साथ-साथ वह अच्छा इंसान भी है। उसकी पढ़ाई के साथ-साथ क्षेत्रों में भी रूचि होनी चाहिए। उसकी खेल-कूद में तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेने की होनी चाहिए। एक आदर्श विद्यार्थी को देश विदेश के बारे में ज्ञान होना चाहिए, उसे सभी सम्मान करना चाहिए। एक अच्छा नागरिक वही है जो बड़ों का सम्मान करें तथा छोटों रखे। कुछ विद्यार्थियों का मानना है कि परीक्षा में अच्छे अंको का होना जरूरी है जबकि मेरा है कि अंकों से ज्यादा ज्ञान का होना जरूरी है। इसलिए हमें अंकों की जगह ज्ञान तथा कौशल अधिक महत्व देना चाहिए। एक आदर्श विद्यार्थी ही देश के लिए एक अच्छा नागरिक बन सकता है। हमें भी एक अच्छा नागरिक बनना चाहिए तथा अपने देश के लिए कुछ करना चाहिए और वात ध्यान में रखकर आगे बढ़ते रहना चाहिए कि –

मंजिल उन्हीं को मिलती है
जिनके सपनों में जान होती है
पंख से कुछ नहीं होता,
हौंसलों से उड़ान होती है।

हेमलता
कक्षा- बी.कॉम (तृतीय वर्ष)

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

उगाए जाते हैं बेटे,
उग जाती हैं बेटियाँ,

सीचें जाते है बेटे,
पल जाती हैं बेटियाँ

निकम्मे होते हैं बेटे,
समझदार होती हैं बेटियाँ,

खर्च करते हैं बेटे,
कमाती हैं बेटियाँ

गिराते हैं बेटे,
उठाती हैं बेटियाँ,

दर्द देते हैं बेटे,
मलहम लगाती हैं बेटियाँ,

सर झुकाते हैं बेटे,
सर उठाती हैं बेटियाँ

सच कहूँ अच्छी होती हैं बेटियाँ,
अच्छी होती हैं बेटियाँ, अच्छी होती हैं बेटियाँ,

"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ"

पायल तंवर
कक्षा- बी.कॉम (द्वितीय वर्ष)

ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग का सरल शब्दों में अर्थ है जलवायु का गरमाना। लेकिन अब ग्लोबल वार्मिंग केवल जलवायु के तापमान में वृद्धि तक सीमित नहीं है वरन् उसे जलवायु परिवर्तन के व्यापक रूप में समझा जाता है। इसे एक अवश्यंभावी प्रलय के रूप में लिया जाता है जिसने अपने लक्षण प्रकट करने आरंभ कर दिये हैं। कहीं असाधारण बारिश और बाढ़ तो कहीं भयंकर सूखा, कहीं भीषण गर्मी तो कहीं असहनीय ठंड, कहीं नदियों का सूखते जाना तो कहीं ग्लेशियरों का पिघलना ये सभी आरंभिक प्रभाव हैं जो निकट भविष्य में खाद्यों व पेयजल की अत्यंत कमी, अकाल, फैलती महामारियों आदि के रूप में विकसित हो सकते हैं।

ग्लोबल वार्मिंग कारण :-

1. कार्बन डाईऑक्साइड प्रमुख ग्रीन हाऊस गैस है जिसका 1970 से 2004 के बीच विश्वव्यापी उत्सर्जन 80 प्रतिशत बढ़ा है। इस वृद्धि का मुख्य कारण जीवाश्म ईंधन के उपयोग में वृद्धि है।
2. वायुमंडल में मीथेन गैस की सांद्रता में वृद्धि होने के बाद 1990 से इसका उत्सर्जन बढ़ गया है।
3. नाइट्रस ऑक्साइड की सांद्रता में वृद्धि का प्रमुख कारण कृषि विस्तार है।

ग्लोबल वार्मिंग से निपटने हेतु व्यक्तिगत प्रयास :-

1. अनावश्यक वस्तुओं को खरीदने से बचें।
2. विद्युत ऊर्जा के उपकरणों का अधिक से अधिक उपयोग करें।
3. वस्तुओं का पुनः उपयोग करके भी ग्लोबल वार्मिंग को कम किया जा सकता है।

यदि सारा विश्व आगामी दस वर्षों में नवीन व नविकरणीय ऊर्जा स्रोत अपना ले, प्रकृतिक संसाधनों के अतृप्त उपभोग पर अंकुश लगाकर अंधाधुंध दोहन बन्द कर दें और वन-रोपण को जनांदोलन बना लें तो ग्लोबल वार्मिंग का निराकरण आसान हो जाएगा। इस लक्ष्य को पाने के लिए सभी को यह सुनिश्चित करना होगा और संकल्प लेना होगा कि कोई भी आर्थिक विकास स्वच्छ, स्वस्थ और हरित पर्यावरण की कीमत पर नहीं होना चाहिए जिसे हम चिरस्थायी विकास के नाम से जानते हैं।

गार्गी
कक्षा- बी.कॉम (प्रथम वर्ष)

आरक्षण

...की मार में रूक गई हूँ मैं भी कही
...ी हूँ मैं क्यूँ न होती आरक्षण की जात में।
...कम हमें है करना, फिर क्यूँ है आरक्षण के लिए लड़ना।
...के मन्दिर में सभी एक समान है, पर दाखिले की दौड़ में आरक्षण का गुण गान है।
...के साथ बदलना प्रकृति का नियम है, बदल जाएगा ये वक्त भी यही मेरा वचन है।

कोमल उपाध्याय
कक्षा- बी.कॉम (तृतीय वर्ष)

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बांटन वारे को लगे, ज्यों मेहंदी को रंग।।

– रहीम

रहिमन तब लगि ठहरिए, दान-मान सनमान।
घटत मान देखिए जबहिं, तुरतहि ही करिय पयान।।

– रहीम

समर्पण

(1) श्री सरस्वती शतदल अधिपति
तेरा स्वर-संगम
द्रुततम कोमल सम्मोहन
प्रज्ञा दायिनी कला निष्णात्री
श्री-वैभव तुम सम्पन्न !
तुमसे मानव की सुगति
श्री सरस्वती शतदल अधिपति !!

(2) तव संगीत मम प्राण-पुलक राग
विद्या-पुष्प-सप्तवर्णी हार
हो दीप्त — स्वर्णिम आभा बार-बार,
सुरम्य वीणावादिनी, सप्त स्वर अनुरागिनी
त्रिभुवन तिमिर विनाशिनी
स्वप्निल सौन्दर्य की परिणति !
श्री सरस्वती शतदल अधिपति !!

(3) अखिल जगत की शक्ति मौलिक
ज्ञान-ज्योति तुम अलौकिक
चिरातीत शक्ति-पुंज
तुम रजनी-सी विश्रान्ति
तव तिग्म तप की
हुई कब समाप्ति ?
श्री सरस्वती शतदल अधिपति !!

डॉ० अमितेश बोकन
सहायक प्रोफेसर, हिंदी-विभाग

महाविद्यालय का विश्वविद्यालय-स्तर पर परीक्षा परिणाम
(सत्र 2016-2017)

क्र.संख्या	नाम	कक्षा	स्थान
		छठा सामिसत्र	
	अनिता यादव	बी.एससी.	पहला
	अंजलि	,,	दूसरा
	अंजलि	,,	तीसरा
	अंजु	,,	चौथा
	अंजु बाला	,,	पाँचवा
	अंजु वाणी	,,	छठा
	अंकिता	,,	सातवाँ
	अनु	,,	आठवाँ
	अनु	,,	नौवाँ
	अनु कुमारी	,,	दसवाँ
	अनु यादव	,,	ग्यारहवाँ
	आकृति भट्ट	बायोटेक्नोलॉजी	पहला
	अनामिका यादव	,,	दूसरा
	अनिता	,,	तीसरी
	अंजलि तंवर	,,	चौथा
	अविका कालरा	,,	पाँचवा
	भावना गोंदवाल	,,	छठा
	छाया	,,	सातवाँ
	दीपिका यादव	,,	आठवाँ
	दिव्या शर्मा	बी.एससी.बायोटैक्नोलॉजी	नौवाँ
	गीता	,,	दसवाँ
	आशा	बी.एससी.गणित आनर्स	पहला
	आशा शर्मा	,,	दूसरा
	चेतना शर्मा	,,	तीसरा
	गीता	,,	चौथा
	हेमा शर्मा	,,	पाँचवा

क्रमांक संख्या	नाम	कक्षा
		छठा सामिसत्र
27.	हिमांशी	बी.एससी.गणित आनर्स
28.	इंदू	,,
29.	ज्योति	,,
30.	काजल	,,
31.	कीर्ति	,,
32.	अनिता यादव	बी.एससी.वनस्पति विज्ञान
33.	अनिता	,,
34.	अनिता	,,
35.	भाविका	,,
36.	भावना यादव	,,
37.	एकता भारद्वाज	,,
38.	गरिमा	,,
39.	ज्योति	,,
40.	ज्योति यादव	,,
41.	खूशबू कुमारी	,,
42.	कृतिका सेठ	,,
43.	अनुष्का तिवारी	बी.एससी.प्राणी शास्त्र
44.	ज्योति	,,
45.	मंजू	,,
46.	नेहा शर्मा	,,
47.	निधि	,,
48.	निशा रानी	,,
49.	पूजा कटारिया	,,
50.	पूजा	,,
51.	पूजा चौधरी	,,
52.	शीतल	,,
53.	सोनाली	,,
54.	वर्षा	,,

क्रमांक संख्या	नाम	कक्षा	स्थान
55.	नेहा धारीवाल	छठा सामिसत्र गृह विज्ञान	पहला
56.	ऋतु कुमारी	,,	दूसरा
57.	शैफाली	,,	तीसरा
58.	दिव्या रानी	अंग्रेजी दूसरा सामिसत्र	नौवाँ
59.	सुरेखा नरवाल	,,	नौवाँ
60.	स्वाति शर्मा	,,	बारहवाँ
61.	निखिल डे	संगीत (गायन/वादन)	पहला
62.	विधू श्री पांडे	,,	तीसरा
63.	कविता	,,	चौथा
64.	रश्मि	,,	पाँचवा
65.	पलकी गर्ग	,,	छठा
66.	सुषमा	,,	सातवाँ
67.	सुनील कुमार	,,	आठवाँ
68.	चंचल	,,	नौवाँ
69.	ज्योति	,,	ग्यारहवाँ
70.	विशाल	,,	बारहवाँ
71.	सतीश कुमार	,,	तेरहवाँ
72.	प्रेमदीप	,,	चौदहवाँ
73.	रेखा	,,	पन्द्रहवाँ
74.	इन्दू बाला	भूगोल	दूसरा
75.	मनीषा	,,	दसवाँ
76.	पूजा मेहरा	,,	बारहवाँ
77.	बबीता	बी.ए.पास. कोर्स	आठवाँ
78.	काजल	राजनीति विज्ञान	तीसरा
79.	निशा वेदी	,,	तीसरा
80.	नेहा	,,	पाँचवा
81.	सरिता	,,	सातवाँ

क्रमांक संख्या	नाम	कक्षा	स्थान
		दूसरा सामिसत्र	
82.	पूजा	राजनीति विज्ञान	आठवाँ
83.	उषा	,,	नौवाँ
84.	पूजा राना	,,	दसवाँ
85.	सोनी	,,	ग्यारहवाँ
86.	निधि	,,	तेरहवाँ
87.	कंचन रानी	,,	चौदहवाँ
88.	सुमन	,,	पन्द्रहवाँ
89.	कोमल	इतिहास ऑनर्स	दूसरा
90	सुमनलता	,,	तीसरा
91.	शिवली यादव	,,	चौथा
92.	अनुप्रिया	,,	पाँचवाँ
93.	पूजा	,,	सातवाँ
94.	मोहिनी	,,	आठवाँ
95.	पूजा	,,	नौवाँ
96.	तान्या शर्मा	अंग्रेजी ऑनर्स	बारहवाँ
97.	सुरभि सीकरी	,,	तेरहवाँ
98.	टीनू	अर्थशास्त्र	चौथा
99.	अंजलि भास्कर	,,	छठा
100.	काजल बाधवा	,,	सातवाँ
101.	अनुप्रिया	,,	आठवाँ
102.	साक्षी शर्मा	,,	नौवाँ
103.	सिमरन जैन	,,	बारहवाँ
104.	प्रिया यादव	,,	तेरहवाँ
105.	कीर्ति दहिया	,,	चौदहवाँ
106.	इतिशा जोशी	,,	पन्द्रहवाँ

क्र.संख्या	नाम	कक्षा	स्थान
		दूसरा सामिसत्र	
	बरखा	बी. कॉम	बारहवाँ
	इन्दू	एम.सी.ए.	पहला
	मोनिका राना	,,	चौथा
	इशा अरोड़ा	,,	पाँचवा
	शिखा गुप्ता	,,	छठा
	राशि बाखरी	,,	बारहवाँ
	तान्या श्रीवास्तव	बी.सी.ए.	बारहवाँ
	आयेश्ना	,,	बारहवाँ

स्वर्ण पदक प्राप्त विद्यार्थियों की सूची (सत्र: 2016-2017)

नाम	कक्षा	अधिकतम अंक	प्राप्तांक
पवन कुमारी	बी.ए. हिन्दी ऑनर्स	1600	1170
सिमरजीत कौर	एम. ए. (संगीत) गायन	1400	1203
कृतिका सेठ	बी. एससी. (वनस्पति शास्त्र) ऑनर्स	2200	1794
निशा यादव	बी. एससी. (प्राणी शास्त्र) ऑनर्स	2200	1853
चिंकी	बी.ए. (अर्थशास्त्र) ऑनर्स	3000	2311

'शोक - संदेश' (सत्र - 2017-2018)

श्रीमती मोना चाहर	ससुर- चौधरी मनफूल सिंह चाहर	3.11.17
श्रीमती गुलशन अरोड़ा	ससुर- श्री महेन्द्र लाल कालरा	9.2.18
श्रीमती जीत कुमारी (जे.एल.ए.)	पिताजी- श्री नानक चन्द	20.2.18
श्री प्रद्युमन	ससुर- श्री एम.एस. यादव	19.2.18
श्रीमती किरण	ससुर- श्री योगेन्द्र पाल प्रभाकर	7.5.18
श्रीमती संजीला पूनिया	ससुर- श्री महाराम	13.5.18

महाविद्यालय-परिवार शोकाकुल व्यक्तियों एवं उनके परिवारों के प्रति अपनी गहरी समवेदना प्रकट करता है तथा प्रभु से प्रार्थना करता है कि वह शोक-संतप्त परिवार को साहस और ऊर्जा देने के साथ-साथ जीवन की पूर्व सुखद निरंतरता प्रदान करें।

ओछे को सतसंग, रहिमन तजहु अंगार ज्यों।
तातो जारे अंग, सीरो पै कारो लगै।।

– रहीम

पत्रिका सम्बन्धी विवरण

	:	डॉ० सुशीला कुमारी, प्राचार्या
	:	राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर-14, गुरुग्राम-122001 (हरियाणा)
	:	सौरभ प्रिन्टिंग प्रैस, महिन्द्रा मार्केट, न्यू रेलवे रोड, गुरुग्राम-122001 (हरियाणा)
अवधि	:	वार्षिक
धिकार	:	**राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर-14, गुरुग्राम**

प्रकाशित रचनाओं के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सभी पद अवैतनिक हैं।

पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद केवल गुरुग्राम न्यायालय के अधीन होंगे।

विद्यार्थियों के लिए सामान्य सूचना

1. विद्यार्थी रचना की हस्तलिखित अथवा टंकित प्रति A4 आकार के पेपर पर पृष्ठ क्रमांक सहित भेजें। हस्तलेख पाठन–योग्य एवं साफ लिखाई में होना चाहिए।

2. विद्यार्थी रचना के साथ अपना नाम, अनुक्रमांक तथा दूरभाष नम्बर का भी उल्लेख करें।

3. रचना के साथ इस आशय का घोषणा–पत्र अवश्य संलग्न करें कि यह रचना उनकी मौलिक रचना है तथा इसे अन्यत्र प्रकाशन के लिए नहीं भेजा गया है।

4. अस्वीकृत रचनाओं को वापिस नहीं किया जाएगा। अतएव उसकी एक प्रति विद्यार्थी अपने पास अवश्य रखें।

5. रचनाकार अपना पासपोर्ट आकार का एक फोटो भी रचना के साथ अवश्य संलग्न करें।

।। क्षान्तिश्चेत्कवचेन किं किमरिभिः क्रोधोऽस्ति चेद्देहिनां
ज्ञातिश्चेदनलेन किं यदि सुहृदद्व्यौषधं किं फलम्।
किं सर्पैर्यदि दुर्जनाः किमु धनैर्विद्याऽनवद्या यदि
व्रीडा चेत्किमु भूषजैः सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम्।।

अर्थात् यदि क्षमा है तो किसी कवच की क्या आवश्यकता है? यदि क्रोध है तो शत्रु की क्या आवश्यकता है? यदि मंत्र है तो औषधियों की क्या आवश्यकता है? यदि दुर्जन का साथ है तो सर्प की क्या आवश्यकता है? यदि विद्या है तो धन की क्या आवश्यकता है? यदि लज्जा है तो अन्य आभूषणों की क्या आवश्यकता है?

– भर्तृहरि

Right :- Dr. Vedwanti, (Associate Professor, Eng.), Dr. Sushila Kumari, (Principal) Sh. Narender Singh (Magistrate, Gurugram Court) sitting in the Divisional Level's Student Legal literacy Function held on April 11, 2018 in the College.

Sh. Narender Singh (Magistrate, Gurugram Court) giving Certificates to the Winners of Divisional Level Legal literacy Function along with Dr. Sushila Kumari (Principal)

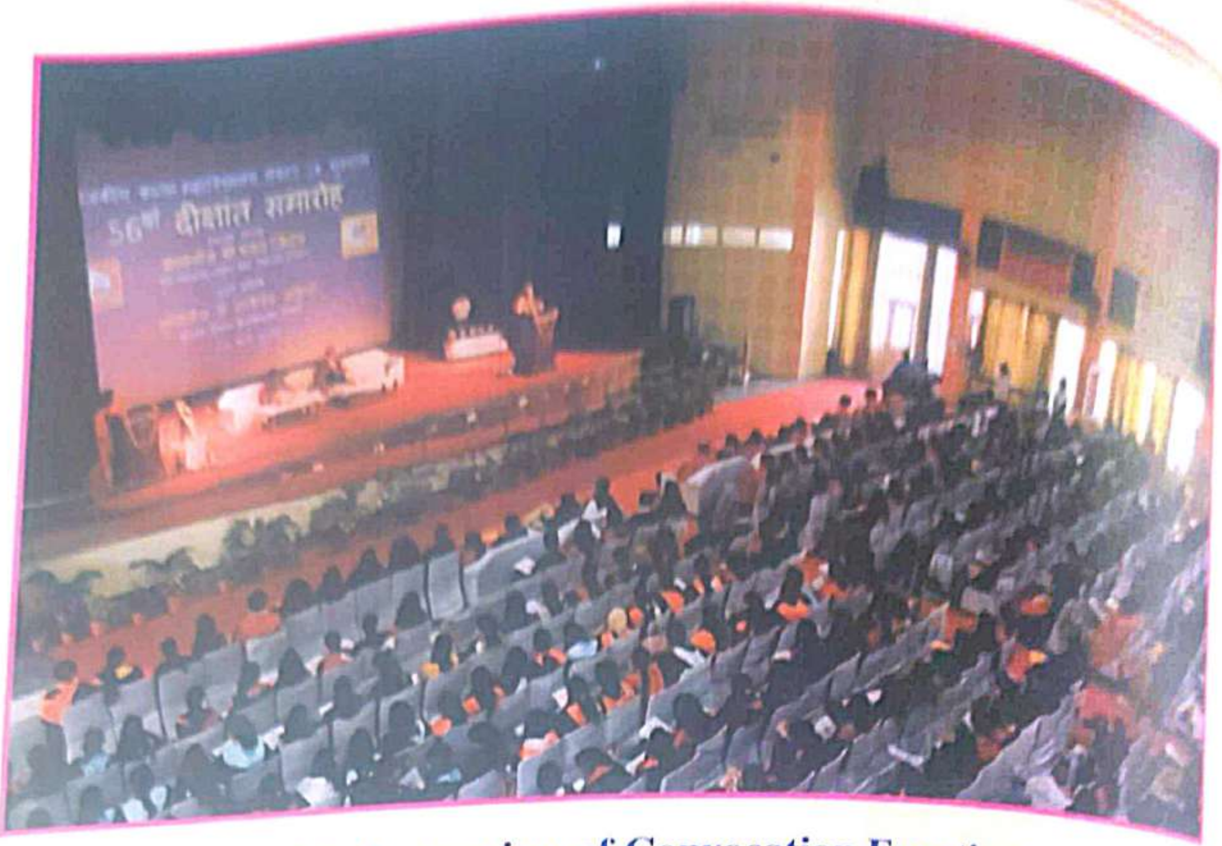

A bird's eye view of Convocation Function of the college.

Winners of different competitions in Zonal Youth Festival along with Principle & Staff Members.

...कीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर-14, गुरुग्राम

...क्षेत्रीय युवा समारोह एवं अन्तर-क्षेत्रीय युवा समारोह में पुरस्कार पाने वाले विद्यार्थियों की सूची (सत्र-2017-2018)

	कक्षा	अनुक्रमांक	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार
...शर्मा	एम.ए. अंग्रेजी-II	1001310016	संस्कृत श्लोकोच्चारण	प्रथम
...	बी.एससी.-III	046	संस्कृत भाषण	प्रथम
...शर्मा	एम.ए. अंग्रेजी-II	1001310016	उर्दू कविता	प्रथम
...ठाकुर	बी.ए. -I	042	अंग्रेजी कविता	प्रथम
...याल	बी.ए. -III	038	हिन्दी वाद-विवाद	प्रथम
...रोहिल्ला	बी.एससी. -III	011	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम
...नी यादव	बी.एससी. -II	025	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम
...ता	बी.एससी. -I	249	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम
...	बी.एससी. -I	183	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम
...ति सहरावत	बी.कॉम. -III	097	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम
...ल भारद्वाज	बी.ए. -I	056	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम
...लि राघव	बी.एससी. -II	215	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम
...पिका रानी	बी.कॉम. -I	313	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम
...ठाकुर	बी.सीए. -I	108	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम
...र्मा	बी.एससी. -II	099	सामान्य समूह नृत्य	प्रथम

नाम	कक्षा	अनुक्रमांक	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार
दिव्या रानी	एम.ए. अंग्रेजी-II	001	संस्कृत नाटक	प्रथम
चेतना चौधरी	बी.एससी.-II	057	संस्कृत नाटक	प्रथम
दीक्षा	एम.सी.ए.-I	022	संस्कृत नाटक	प्रथम
शुभालक्ष्मी त्रिवेदी	बी.एससी.-I	022	संस्कृत नाटक	प्रथम
प्रिया कुमारी	बी.कॉम.-II	256	संस्कृत नाटक	प्रथम
तुष्टि	बी.कॉम.-I	291	संस्कृत नाटक	प्रथम
पूजा कश्यप	बी.एससी.-II	024	संस्कृत नाटक	प्रथम
चंचल ठाकुर	बी.एससी.-III	025	संस्कृत नाटक	प्रथम
विनती यादव	बी.एससी.-III	072	संस्कृत नाटक	प्रथम
निखिल डे	एम.ए.-III (Music)	008	शास्त्रीय एकल वादन	प्रथम
निखिल डे	एम.ए.-III (Music)	008	हरियाणवी वाद्यवृन्द	द्वितीय
तुलसी	बी.ए.-II	297	हरियाणवी वाद्यवृन्द	द्वितीय
तुलसी	बी.ए.-II	297	हरियाणवी वाद्यवृन्द	द्वितीय
शिप्रा मिश्रा	बी.ए.-III	256	हरियाणवी वाद्यवृन्द	द्वितीय
मोनेका	बी.ए.-II	563	हरियाणवी वाद्यवृन्द	द्वितीय
रानी	बी.ए.-III	203	हरियाणवी वाद्यवृन्द	द्वितीय
प्रियंका	बी.ए.-III	184	हरियाणवी वाद्यवृन्द	द्वितीय
दीप्ति सचदेवा	बी.ए.-I	566	हरियाणवी वाद्यवृन्द	द्वितीय

	कक्षा	अनुक्रमांक	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार
	बी.एससी.-III	124	हरियाणवी स्किट	द्वितीय
	बी.एससी.-I	056	हरियाणवी स्किट	द्वितीय
	बी.एससी.-III	017	हरियाणवी स्किट	द्वितीय
...यादव	बी.एससी.-III	172	हरियाणवी स्किट	द्वितीय
	बी.कॉम.-III	024	हरियाणवी स्किट	द्वितीय
...अलारिया	एम.बी.ए.-III	034	हरियाणवी स्किट	द्वितीय
...दून	बी.एससी-III	046	अंग्रेजी वाद-विवाद (पक्ष)	द्वितीय
...ाली चौधरी	एम.ए.-II	058	अंग्रेजी वाद-विवाद (विपक्ष)	द्वितीय
...जल अली	बी.एससी-II (H.Sc.)	024	रंगोली	द्वितीय
	एम.सीए-I	022	सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार	

अन्तर-क्षेत्रीय युवा समारोह में विभिन्न पुरस्कार पाने वाले विद्यार्थियों की सूची

नाम	कक्षा	अनुक्रमांक	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार
निखिल डे	एम.ए.-II (Music)	008	शास्त्रीय एकल वादन	प्रथम
सृष्टि ठाकुर	बी.ए.-I	042	अंग्रजी कविता	प्रथम
वर्षा दलाल	बी.ए.-III	038	हिन्दी वाद-विवाद	प्रथम
ईशा जून	बी.एससी.-III	046	अंग्रेजी वाद-विवाद	प्रथम
दिव्या रानी	एम.ए.-II	001	संस्कृत नाटक	प्रथम
चेतना चौधरी	बी.एससी.-II	057	संस्कृत नाटक	प्रथम

Students participating in race competition in Annual Athletic Meet.

Students with their teacher incharge on Education Tour.

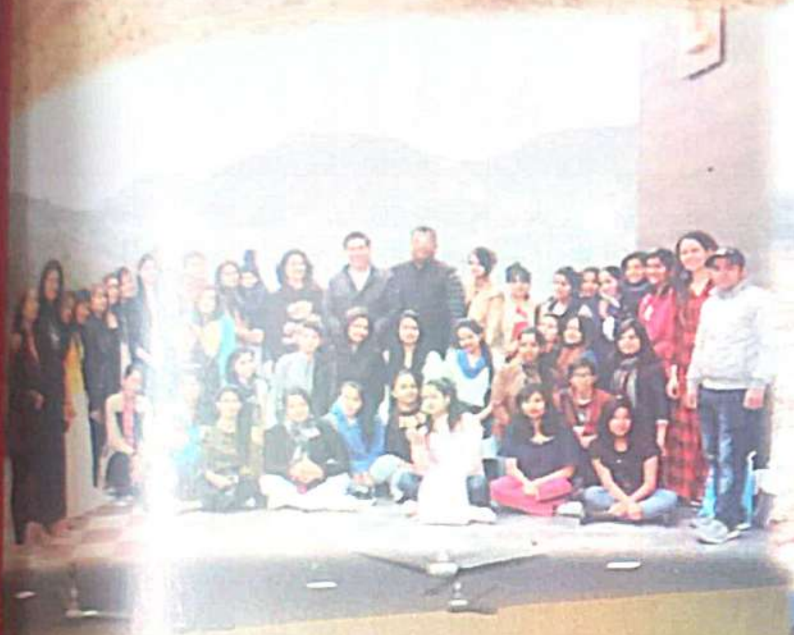

1
2
3

राजकीय कन्या महाविद्यालय सेक्टर-14, गुरूग्राम
GOVT. COLLEGE For GIRLS